दिसम्बर- 2024, वर्ष 33, अंक 65

उत्तर प्रदेश संदेश

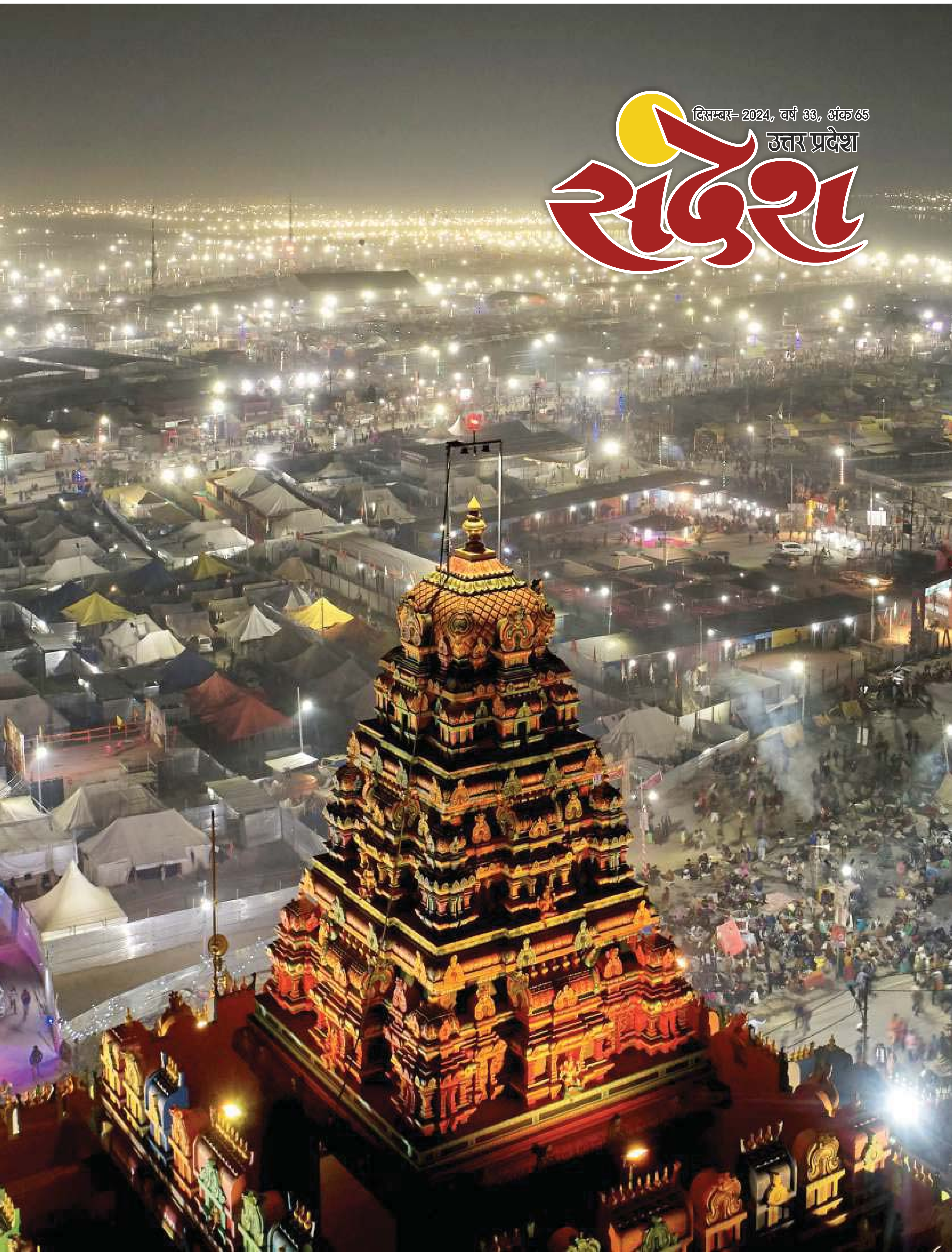

सनातन गर्व
महाकुम्भ पर्व
दिव्य-भव्य-डिजिटल
एकता का महाकुम्भ
महाकुम्भ 2025 प्रयागराज
13 जनवरी से 26 फरवरी
विस्तार है अपार : 4,000 हेक्टेयर में मेला क्षेत्र
घर जैसा वैभव-विलास : 1,60,000 टेंट
सतर्क एवं समग्र सुरक्षा : 2,750 सीसीटीवी कैमरे
स्वच्छता में सर्वोत्तम : 1,50,000 शौचालय
कुम्भ सहायक चैटबॉट हेतु QR कोड स्कैन करें
कुम्भ सहायक
वाट्सऐप नं. 8887847135
पर 'नमस्ते' भेजें
आकस्मिक सेवाएं
मेला प्रशासन
आवास एवं आहार
यूपी की उपलब्धियां
mahakumbh_25/ upmahakumbh MahaKumbh_2025 https://kumbh.gov.in/
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

दिसम्बर-2024, वर्ष 33, अंक 65

उत्तर प्रदेश संदेश

संरक्षक एवं मार्गदर्शक :
संजय प्रसाद
प्रमुख सचिव, सूचना

❖

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी :
शिशिर
सूचना निदेशक

❖

सम्पादकीय परामर्श :
अंशुमान राम त्रिपाठी
अपर निदेशक, सूचना

❖

डॉ. मधु ताम्बे
उपनिदेशक सूचना

❖

डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक निदेशक, सूचना

❖

प्रभारी सम्पादक :
दिनेश कुमार गुप्ता
उपसम्पादक, सूचना

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
ईमेल : upsandesh20@gmail.com
दूरभाष कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 9412674759, 7705800978

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित

भारत सरकार के रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या : 55884/91

प्रकाशित सामग्री में विभिन्न लेखकों के दृष्टिकोण एवं विचार से सूचना विभाग की सहमति अनिवार्य नहीं हैं। लेखों में प्रयुक्त आंकड़े अनन्तिम हो सकते हैं।

इस अंक में

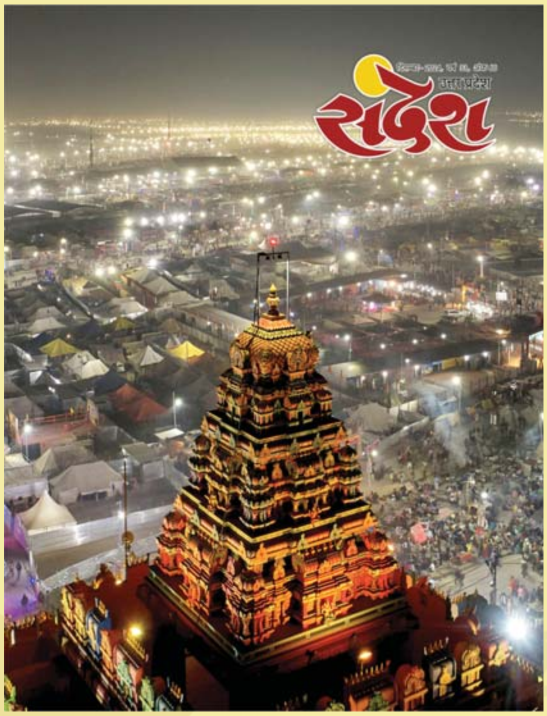

◆ राष्ट्र को समर्पित रहा अटल जी का जीवन — 3
–डॉ. सौरभ मालवीय

◆ देखते ही बनेगा ग्रीन एवं स्वच्छ महाकुम्भ — 6
–प्रद्युम्न तिवारी

◆ महाकुम्भ के स्वागत को तैयार होता प्रयागराज — 9
–सियाराम पांडेय 'शांत'

◆ योगी राज में पूरा विश्व देखेगा डिजिटल महाकुम्भ — 14
–डॉ. सुयश मिश्रा

◆ महाकुम्भ की तैयारियां : सांस्कृतिक आयोजन — 18
–दिनेश कुमार गुप्ता

◆ इस बार कुम्भ में नहीं बिछड़ेंगे 'अपने' — 22
–जितेन्द्र शुक्ला

◆ महाकुम्भ-2025 में बनेंगे चार गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड — 25
–रूद्रेश घिल्डियाल

◆ सशक्त नारी सशक्त प्रदेश — 30
–मुकुल मिश्रा

सम्पादकीय

स्वच्छ सुरक्षित और सुव्यवस्थित होगा महाकुम्भ का आयोजन

गंगा यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम स्थल प्रयागराज में आगामी वर्ष में आयोजित होने वाले दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक मेले महाकुम्भ की तैयारियां जोरों पर हैं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कुम्भ को दिव्य और भव्य बनाने के लिए स्वयं इसकी तैयारियों का निरीक्षण कर रहे हैं इस बड़े आयोजन को सुरक्षित बनाने के लिए अभेद्य रणनीतियां तैयार कर ली गई हैं। पिछले दिनों मेले की तैयारियों का जायजा लेने के लिए योगी जी ने स्वयं प्रयागराज का दौरा किया था, जहां उन्होंने पर्यटकों और श्रद्धालुओं की सुरक्षा को लेकर सख्त निर्देश जारी किए हैं। मुख्यमंत्री के निर्देश पर महाकुम्भ में सात स्तर की सुरक्षा व्यवस्था की रणनीति तैयार की गई है, जिससे किसी भी अप्रिय घटना से तत्काल निपटा जा सके और समय रहते इस तरह की घटनाओं को टाला जा सके। इसके लिए लगभग 37 हजार से अधिक पुलिस कर्मी मेले में आने वाले अतिथियों की मदद के लिए तैनात रहेंगे।

भीड़ प्रबंधन के साथ-साथ मेले में पहुंचने वाले हर व्यक्ति की गतिविधियों पर सुरक्षाकर्मियों की नज़र होगी। इसके लिए लोकल इंटेलिजेंस यूनिट्स के साथ पुलिसकर्मियों के अलग-अलग विभाग निरन्तर सम्पर्क में रहेंगे। इसके लिए सम्पूर्ण मेला अवधि के दौरान इस प्रकार के सुरक्षा ऑपरेशन भी चलाए जायेंगे। पहली बार शहर में 39 ट्रैफिक जंक्शन का निर्माण किया जा रहा है तकरीबन 50 करोड़ के बजट से इनका निर्माण हो रहा है मुख्यमंत्री जी ने संगम तट पर ही स्वच्छ, सुरक्षित और सुव्यवस्थित महाकुम्भ 2025 की थीम के साथ पुलिसकर्मियों के अलग-अलग विभाग निरन्तर सम्पर्क में रहेंगे। इसके लिए सम्पूर्ण मेला अवधि के दौरान इस प्रकार के सुरक्षा ऑपरेशन भी चलाए जायेंगे पहली बार शहर में 39 ट्रैफिक जंक्शन का निर्माण किया जा रहा है। तकरीबन 50 करोड़ के बजट से इनका निर्माण हो रहा है मुख्यमंत्री जी ने संगम तट पर ही स्वच्छ सुरक्षित और सुव्यवस्थित महाकुम्भ 2025 की थीम के साथ महाकुम्भ के लोगो और वेबसाइट का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को दस दिसम्बर तक निर्माण कार्य पूरे करने के निर्देश दिए हैं। मेला स्थल पर लगभग सात हजार बसें चलेंगी और डेढ़ लाख शौचालय बनाये जायेंगे।

मेला परिसर में स्वच्छ और शुद्ध वातावरण बनाए रखने के लिए बड़ी संख्या में कर्मचारियों की तैनाती की जा रही है। गंगा यमुना का जल निर्मल बना रहे इसके लिए नदियों में प्रदूषण पूरी तरह से रोका जायेगा। यात्रियों के लिए गंगा तट तक पहुंचने के लिए स्टील ब्रिज दिसम्बर के पहले सप्ताह तक तैयार करने के निर्देश दिए गये हैं।

सुरक्षा की दृष्टि से मेला क्षेत्र में तीन पुलिस लाइन, तीन महिला थाना और 10 पुलिस चौकी स्थापित करने के मुख्यमंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि प्रत्येक श्रद्धालु की आस्था का सम्मान करते हुए हर किसी से अच्छा व्यवहार करें।

सम्पादक

पुण्य स्मरण

राष्ट्र को समर्पित रहा अटल जी का जीवन

–डॉ. सौरभ मालवीय

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रखर चिंतक, गंभीर पत्रकार, सहृदय कवि एवं लेखक थे। साहित्य उन्हें विरासत में प्राप्त हुआ था। उन्होंने पत्रकारिता से जीवन प्रारंभ किया तथा साहित्य एवं राजनीति में अपार ख्याति अर्जित की। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित रहा। वह कहते थे– "मैं चाहता हूं भारत एक महान राष्ट्र बने, शक्तिशाली बने, संसार के राष्ट्रों में प्रथम पंक्ति में आए।"

प्रारंभिक जीवन

अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर, 1924 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर में हुआ था। उनके पिता पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी अध्यापक थे और माता कृष्णा देवी गृहिणी थीं। वह बचपन से ही अंतर्मुखी एवं प्रतिभाशाली थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा बड़नगर के गोरखी विद्यालय में हुई। यहां से उन्होंने आठवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की। जब वह पांचवीं कक्षा में थे तब उन्होंने प्रथम बार भाषण दिया था। बड़नगर में उच्च शिक्षा की व्यवस्था न होने के कारण उन्हें ग्वालियर जाना पड़ा। वहां के विक्टोरिया कॉलेजियट स्कूल से उन्होंने इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई की। इस विद्यालय में रहते हुए उन्होंने वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा प्रथम पुरस्कार भी जीता। उन्होंने विक्टोरिया कॉलेज से स्नातक स्तर की शिक्षा ग्रहण की। कॉलेज जीवन में ही उन्होंने राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना आरंभ कर दिया था। आरंभ में वह छात्र संगठन से जुड़े। इसके पश्चात वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गए। ग्वालियर से स्नातक उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् वह कानपुर चले गए। यहां उन्होंने डीएवी महाविद्यालय से कला में स्नातकोत्तर उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की। तदुपरांत वह पीएचडी करने के लिए लखनऊ गए, परंतु वह सफल नहीं हो सके, क्योंकि पत्रकारिता से जुड़ने के कारण उन्हें अध्ययन के लिए समय नहीं मिल रहा था।

पत्रकार के रूप में अटलजी

अटलजी लखनऊ आकर समाचार–पत्र राष्ट्रधर्म के सह सम्पादक के रूप में कार्य करने लगे। वह मासिक पत्रिका राष्ट्रधर्म के प्रथम संपादक भी रहे हैं। अटलजी कहते थे– "छात्र जीवन से ही मेरी इच्छा संपादक बनने की थी। लिखने–पढ़ने का शौक और छपा हुआ नाम देखने का मोह भी। इसलिए जब एमए की पढ़ाई पूरी की और कानून की पढ़ाई अधूरी छोड़ने के पश्चात् सरकारी नौकरी न करने का पक्का इरादा बना लिया और साथ ही अपना पूरा समय समाज की सेवा में लगाने का मन भी। उस समय पूज्य भाऊ राव देवरस जी के इस प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार कर लिया कि संघ द्वारा प्रकाशित होने वाले राष्ट्रधर्म के संपादन में कार्य करूंगा, श्री राजीवलोचन जी भी साथ होंगे। अगस्त 1947 में पहला अंक निकला और इसने उस समय के प्रमुख साहित्यकार सर सीताराम, डॉ. भगवान दास, अमृतलाल नागर, श्री नारायण चतुर्वेदी, आचार्य वृहस्पति व प्रोफेसर धर्मवीर को जोड़कर धूम मचा दी।"

कुछ समय के पश्चात 14 जनवरी, 1948 को भारत प्रेस से मुद्रित होने वाला दूसरा समाचार पत्र पांचजन्य भी प्रकाशित होने लगा। अटलजी इसके प्रथम संपादक बनाए

स्वर सुनाई देते थे। वह कहते थे– "मेरे भाषणों में मेरा लेखक ही बोलता है, पर ऐसा नहीं कि राजनेता मौन रहता है। मेरे लेखक और राजनेता का परस्पर समन्वय ही मेरे भाषणों में उतरता है। यह जरूर है कि राजनेता ने लेखक से बहुत कुछ पाया है। साहित्यकार को अपने प्रति सच्चा होना चाहिए। उसे समाज के लिए अपने दायित्व का सही अर्थों में निर्वाह करना चाहिए। उसके तर्क प्रामाणिक हो। उसकी दृष्टि रचनात्मक होनी चाहिए। वह समसामयिकता को साथ लेकर चले, पर आने वाले कल की चिंता जरूर करे। वे भारत को विश्वशक्ति के रूप में देखना चाहते हैं।" अटलजी ने कई पुस्तकें लिखी थीं, जिनमें अमर बलिदान, अमर आग है, बिंदु–बिंदु विचार, सेक्युलरवाद, कैदी कविराय की कुंडलियां, मृत्यु या हत्या, जनसंघ और मुसलमान, मेरी इक्यावन कविताएं, न दैन्यं न पलायनम, मेरी संसदीय यात्रा (चार खंड), संकल्प–काल एवं गठबंधन की राजनीति सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त उनकी कई और पुस्तकें भी हैं। फोर डिकेड्स इन पार्लियामेंट, जो 1957 से 1995 तक के उनके भाषणों का संग्रह है। इसी तरह न्यू डाइमेंशन ऑफ इंडियाज फॉरेन पॉलसी, जिसमें विदेश मंत्री रहते हुए उनके 1977 से 1979 तक के भाषण संकलित हैं। संसद में तीन दशक (तीन खंड), जो 1957 से 1992 तक संसद में दिए गए भाषणों का संग्रह है। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी (तीन खंड), जिसमें 1996 से 2004 उनके भाषण सम्मिलित हैं। राजनीति की रपटीली राहें, जो उनके साक्षात्कार और भाषणों का संग्रह है। शक्ति से शांति तक, जिसमें उनके प्रधानमंत्री कार्यकाल के भाषण संकलित हैं। कुछ लिख कुछ भाषण, जो पत्रकारिता के समय के लेख और भाषण सम्मिलित हैं। राजनीति के उस पार, जिसमें उनके भाषण संकलित हैं। इसके अलावा उनके लेख, उनकी कविताएं विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं, जिनमें राष्ट्रधर्म, पांचजन्य, धर्मयुग, नई कमल ज्योति, साप्ताहिक हिंदुस्तान, कादम्बिनी और नवनीत आदि सम्मिलित हैं।

गए। 15 अगस्त, 1947 को देश स्वतंत्र हो गया था। कुछ समय के पश्चात 30 जनवरी, 1948 को महात्मा गांधी की हत्या हुई। इसके पश्चात् भारत सरकार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रतिबंधित कर दिया। इसके साथ ही भारत प्रेस को बंद कर दिया गया, क्योंकि भारत प्रेस भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रभाव क्षेत्र में थी। भारत प्रेस के बंद होने के पश्चात अटलजी इलाहाबाद चले गए। यहां उन्होंने क्राइसिस टाइम्स नामक अंग्रेजी साप्ताहिक के लिए कार्य करना आरंभ कर दिया। परंतु जैसे ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर लगा प्रतिबंध हटा, वह पुनः लखनऊ आ गए और उनके संपादन में स्वदेश नामक दैनिक समाचार–पत्र प्रकाशित होने लगा, परंतु हानि के कारण स्वदेश को बंद कर दिया गया। वर्ष 1949 में काशी से सप्ताहिक 'चेतना' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसके संपादक का कार्यभार अटलजी को सौंपा गया। उन्होंने इसे सफलता के शिखर तक पहुंचा दिया।

कवि एवं लेखक

अटलजी ने बचपन से ही कविताएं लिखनी प्रारंभ कर दी थीं। स्वदेश–प्रेम, जीवन–दर्शन, प्रकृति तथा मधुर भाव की कविताएं उन्हें बाल्यावस्था से ही आकर्षित करती रहीं। उनकी कविताओं में प्रेम, करुणा एवं वेदना है। एक पत्रकार के रूप में वह बहुत गंभीर दिखाई देते थे। उनके लेखों में ज्वलंत प्रश्न हैं, समस्याओं का उल्लेख है तो उनका समाधान भी है। वह सामाजिक विषयों को उठाते एवं अतीत की भूलों से शिक्षा लेते हुए सुधार की बात करते थे। एक राजनेता के रूप में जब वह भाषण देते हैं, तो उसमें क्रांति के

प्रधानमंत्री के रूप में विशेष कार्य

अटलजी 16 मई, 1996 को देश के प्रधानमंत्री बने तथा 28 मई को उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। इस कारण वह

मात्र 13 दिनों तक ही प्रधानमंत्री रहे। इसके पश्चात 9 मार्च, 1998 को वह द्वितीय बार प्रधानमंत्री बने। वर्ष 1999 के लोकसभा चुनाव में एनडीए को स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ। वह 13 अक्टूबर 1999 को तृतीय बार प्रधानमंत्री बने तथा 22 मई, 2004 तक अपना कार्यकाल पूर्ण किया। उन्होंने अपने कार्यकाल में अनेक उत्कृष्ट कार्य किए। उन्होंने वर्ष 1998 में पोखरण में हुए परमाणु परीक्षण के पश्चात् संसद को संबोधत किया। उन्होंने कहा– "यह कोई आत्मश्लाघा के लिए नहीं था। ये हमारी नीति है और मैं समझता हूं कि देश की नीति है यह कि न्यूनतम अवरोध होना चाहिए। वह विश्वसनीय भी होना चाहिए। इसीलिए परीक्षण का निर्णय लिया गया।"

उन्होंने वर्ष 1999 में भारतीय संचार निगम लिमिटेड अर्थात बीएसएनएल का एकाधिकार समाप्त करने के लिए नई टेलिकॉम नीति लागू की। इसके कारण लोगों को सस्ती दरों पर दूरभाष सेवा उपलब्ध हो सकी। उन्होंने भारत एवं पाकिस्तान के आपसी संबंधों को सुधारने के प्रयास को गति प्रदान की। उन्होंने फरवरी 1999 में दिल्ली–लाहौर बस सेवा प्रारंभ की। प्रथम बस सेवा से वह स्वयं लाहौर गए। उन्होंने सर्व शिक्षा अभियान को बढ़ावा दिया। उन्होंने 6 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने का अभियान प्रारंभ किया। उन्होंने अपनी लिखी पंक्तियों 'स्कूल चले हम' से इसे प्रचारित किया। इससे निर्धनता के कारण पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों को अत्यंत लाभ हुआ। वह कहते थे– "शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है, व्यक्तित्व के उत्तम विकास के लिए शिक्षा का स्वरूप आदर्शों से युक्त होना चाहिए। हमारी माटी में आदर्शों की कमी नहीं है। शिक्षा द्वारा ही हम नवयुवकों में राष्ट्र प्रेम की भावना जाग्रत कर सकते हैं।"

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रखर चिंतक, गंभीर पत्रकार, सहृदय कवि एवं लेखक थे। साहित्य उन्हें विरासत में प्राप्त हुआ था। उन्होंने पत्रकारिता से जीवन प्रारंभ किया तथा साहित्य एवं राजनीति में अपार ख्याति अर्जित की। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित रहा। वह कहते थे- "मैं चाहता हूं भारत एक महान राष्ट्र बने, शक्तिशाली बने, संसार के राष्ट्रों में प्रथम पंक्ति में आए।"

उन्होंने संविधान में संशोधन की आवश्यकता पर विचार करने के लिए एक फरवरी 2000 को संविधान समीक्षा का राष्ट्रीय आयोग गठित किया। उन्होंने वर्ष 2001 में होने वाली जातिगत जनगणना पर रोक लगाई।

उन्होंने 13 दिसंबर, 2001 को संसद पर हुए हमले को गंभीरता से लिया तथा आतंकवाद निरोधी पोटा कानून बनाया। यह पूर्व के टाडा कानून की तुलना में अत्यधिक कठोर था। उन्होंने 32 संगठनों पर पोटा के अंतर्गत प्रतिबंध लगाया। उन्होंने दिल्ली, मुंबई, चेन्नई एवं कोलकाता को जोड़ने के लिए चतुर्भुज सड़क परियोजना लागू की। इसके साथ ही उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना लागू की। इससे आर्थिक विकास को गति मिली। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर नदियों को जोड़ने की योजना का ढांचा भी बनवाया, परंतु इस पर कार्य नहीं हो पाया।

सम्मान

अटलजी ने एक पत्रकार, साहित्यकार, कवि एवं देश के प्रधानमंत्री, संसद की विभिन्न महत्वपूर्ण स्थायी समितियों के अध्यक्ष एवं विपक्ष के नेता के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। राष्ट्र के प्रति उनकी समर्पित सेवाओं के लिए 25 जनवरी, 1992 में राष्ट्रपति ने उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने 28 सितंबर, 1992 को उन्हें 'हिंदी गौरव' से सम्मानित किया। अगले वर्ष 20 अप्रैल, 1993 को कानपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें डी लिट की उपाधि प्रदान की। उनके सेवाभावी और स्वार्थ त्यागी जीवन के लिए उन्हें 1 अगस्त, 1994 में लोकमान्य तिलक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके पश्चात 17 अगस्त, 1994 को संसद ने उन्हें श्रेष्ठ सांसद चुना गया तथा पंडित गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके पश्चात् 27 मार्च, 2015 भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इतने महत्वपूर्ण सम्मान पाने वाली अटलजी कहते थे– "मैं अपनी सीमाओं से परिचित हूं। मुझे अपनी कमियों का अहसास है। निर्णायकों ने अवश्य ही मेरी न्यूनताओं को नजर अंदाज करके मुझे निर्वाचित किया है। सद्भाव में अभाव दिखाई नहीं देता है। यह देश बड़ा है अद्भुत है, बड़ा अनूठा है। किसी भी पत्थर को सिंदूर लगाकर अभिवादन किया जा सकता है। ◆

मो. 8750820740

देखते ही बनेगा ग्रीन एवं स्वच्छ महाकुम्भ

–प्रद्युम्न तिवारी

महाकुम्भ 2025 को स्वच्छ महाकुम्भ के रूप में स्थापित करने के लिए योगी सरकार ने सिर्फ कमर ही नहीं कसी है, बल्कि 'फुल प्रूफ' योजना के तहत कार्य किये जा रहे हैं। योजना के अंतर्गत श्रद्धालु महाकुम्भ के दौरान शौचालयों और यूरिनल्स की साफ–सफाई से संबंधित किसी भी समस्या का सामना न करें और उन्हें स्वच्छ, सुरक्षित और सुविधाजनक माहौल प्राप्त हो, यह सुनिश्चित किया गया है। मेला प्रशासन ने इसके लिए विशेष गाइडलाइंस जारी की हैं, जिनके अनुसार शौचालयों की सफाई और जनशक्ति की तैनाती पर जोर दिया जाएगा। इतना ही नहीं योगी सरकार आईआईटी के विशेषज्ञों की भी राय लेकर कदम आगे बढ़ा रही है।

योगी सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि महाकुम्भ के दौरान 10 शौचालयों पर एक सफाईकर्मी तैनात किया जाए, और 10 सफाईकर्मियों के लिए एक सुपरवाइजर को जिम्मेदारी दी जाएगी। इसी प्रकार, 20 यूरिनल्स पर एक सफाईकर्मी और 20 सफाईकर्मियों पर एक सुपरवाइजर को तैनात किया जाएगा। इसके साथ ही सफाईकर्मियों को व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (PPE) जैसे दस्ताने और जूते पहनने की अनिवार्यता होगी, ताकि उनकी सुरक्षा भी सुनिश्चित हो सके। स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए गंध नियंत्रण तकनीकों का इस्तेमाल किया जाएगा। शौचालयों में फ्लश सिस्टम, नल, शॉवर और वॉशबेसिनों को बिना किसी रिसाव के सुनिश्चित किया जाएगा। इसके साथ ही

महाकुम्भ 2025 को स्वच्छ महाकुम्भ के रूप में स्थापित करने के लिए योगी सरकार ने सिर्फ कमर ही नहीं कसी है, बल्कि 'फुल प्रूफ' योजना के तहत कार्य किये जा रहे हैं। योजना के अंतर्गत श्रद्धालु महाकुम्भ के दौरान शौचालयों और यूरिनल्स की साफ-सफाई से संबंधित किसी भी समस्या का सामना न करें और उन्हें स्वच्छ, सुरक्षित और सुविधाजनक माहौल प्राप्त हो, यह सुनिश्चित किया गया है। मेला प्रशासन ने इसके लिए विशेष गाइडलाइंस जारी की हैं, जिनके अनुसार शौचालयों की सफाई और जनशक्ति की तैनाती पर जोर दिया जाएगा। इतना ही नहीं योगी सरकार आईआईटी के विशेषज्ञों की भी राय लेकर कदम आगे बढ़ा रही है।

टॉयलेट पेपर, साबुन डिस्पेंसर, हैंड सैनिटाइजर और महिला स्वच्छता उत्पादों की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जाएगी। गंध को 10–15 मिनट में हटाने और कचरे को 24 घंटे में विघटित करने की व्यवस्था की जाएगी, ताकि लगातार उपयोग के बावजूद शौचालयों में गंदगी और बदबू न रहे।

मेला क्षेत्र में दिव्यांगों के लिए शौचालयों की सुलभता को भी प्रमुखता दी जाएगी। प्रत्येक 10 शौचालयों में से कम से कम एक शौचालय को दिव्यांगों के लिए विशेष रूप से तैयार किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, सभी शौचालयों में उचित प्रकाश व्यवस्था, सुरक्षित जेट स्प्रे मशीनों और अन्य आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध कराया जाएगा। शौचालयों में सक्शन मशीनों की तैनाती और अपशिष्ट निपटान की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाएगी, ताकि साफ–सफाई में कोई कमी न हो।

साथ ही योगी सरकार इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नॉलॉजी (आईआईटी) का सहयोग लेने का भी स्वागतयोग्य निर्णय लिया है। मेला क्षेत्र के विस्तार से लेकर महाकुम्भ के समग्र मूल्यांकन के लिए आईआईटी के विशेषज्ञों की मदद ली जाएगी। संगम क्षेत्र व घाटों को साफ और सुंदर बनाया जाएगा व वर्टिकल गार्डेन का रख–रखाव किया जाएगा। इस संबंध में उच्च शासन स्तर पर आयोजित बैठक में महाकुम्भ के लिए आईआईटी–गुवाहाटी के विशेषज्ञों द्वारा दिये गये परामर्श के मुताबिक प्रयागराज में गंगा नदी के दाहिने तट पर शास्त्री ब्रिज से संगम नोज तक 19.57 करोड़ रुपये की लागत से सरकुलेटिंग एरिया के वृद्धि सम्बन्धित कार्य के लिए सैद्धांतिक सहमति प्रदान की गई। इसके लिए सिंचाई विभाग को प्रस्ताव तैयार कर नगर विकास विभाग को भेजने के निर्देश दिये गये। इसके अलावा महाकुम्भ–2025 का आईआईटी–कानपुर द्वारा समग्र मूल्यांकन करने के लिए 95.53 लाख रुपये के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया। आईआईटी कानपुर की टीम पुलिस सिक्योरिटी एवं उनके डिप्लॉयमेंट प्लान्स, ट्रैफिक एवं श्रद्धालुओं के मूवमेंट एक्सपीरियंस, मेले संबंधित सभी कार्यों की प्लानिंग, ऑर्गेनाइजेशन एवं प्रोजेक्ट मैनेजमेंट स्ट्रेटेजीज तथा मेले के सोशियो इकोनॉमिक इम्पैक्ट के बारे में रिसर्च कर रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

वहीं मेला क्षेत्र में एक लाइब्रेरी स्थापित की जायेगी। लाइब्रेरी में सनातन धर्म व संस्कृति तथा महाकुम्भ से संबंधित पाठ्य पुस्तकों को रखा जाएगा। बैठक में महाकुम्भ

साथ ही योगी सरकार इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नॉलॉजी (आईआईटी) का सहयोग लेने का भी स्वागतयोग्य निर्णय लिया है। मेला क्षेत्र के विस्तार से लेकर महाकुम्भ के समग्र मूल्यांकन के लिए आईआईटी के विशेषज्ञों की मदद ली जाएगी। संगम क्षेत्र व घाटों को साफ और सुंदर बनाया जाएगा व वर्टिकल गार्डेन का रख-रखाव किया जाएगा।

मेले के दौरान आवागमन के लिए 2.81 करोड़ रुपये की लागत से रैना मार्ग का चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण के लोक निर्माण विभाग के प्रस्ताव को अनुमोदन प्रदान किया गया। महाकुम्भ के लिए अस्थाई स्टोर हेतु अस्थायी वेयर हाउस, अस्थाई बाउण्ड्रीवाल एवं पहुँच मार्ग निर्माण के साथ अन्य स्टोर सम्बन्धित कार्य के लिए लोक निर्माण विभाग के 7.98 करोड़ रुपये के प्रस्ताव को अनुमोदन प्रदान किया गया। बैठक में बताया गया कि महाकुम्भ में चार गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाए जाएंगे। इसके माध्यम से मेला प्रशासन पूरी दुनिया को ग्रीन एवं स्वच्छ महाकुम्भ का संदेश देगा। इस पर कुल 4.87 करोड़ रुपये खर्च होंगे। मेला प्रशासन की ओर से एक हजार ई–रिक्शे का परेड निकाला जाएगा, जो एक रिकॉर्ड होगा। एक साथ 15 हजार लोगों के माध्यम से घाटों की सफाई का रिकॉर्ड बनाया जायेगा। इसके अलावा एक अन्य रिकॉर्ड नदियों की सफाई का भी बनेगा। 300 लोग एक साथ नदी में उतरेंगे और सफाई अभियान को गति देने के साथ ही पूरे विश्व को स्वच्छता का संदेश देंगे। गंगा पंडाल व मेला क्षेत्र में मात्र आठ घंटे में 10 हजार लोगों के हाथों हैण्डप्रिंट प्रिंटिंग बनाने का रिकॉर्ड बनाया जायेगा। इस प्रकार, महाकुम्भ 2025 में स्वच्छता को लेकर योगी सरकार ने व्यापक तैयारियां की हैं, ताकि आने वाले श्रद्धालु एक स्वच्छ, सुरक्षित और यादगार अनुभव लेकर वापस लौट सकें। ◆

मो. : 9935097419

महाकुम्भ के स्वागत को तैयार होता प्रयागराज

—सियाराम पांडेय 'शांत'

दुनिया का सबसे बड़ा और तकरीबन डेढ़ माह तक चलने वाला धार्मिक समागम हो और उसमें कोई कमी रह जाए, यह उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ को हरगिज गंवारा नहीं। अपने पहले कार्यकाल में वे कुम्भ का भव्य और दिव्य आयोजन करा चुके हैं। इससे पूर्व उन्होंने उत्तर प्रदेश के अलग–अलग शहरों में पांच कुम्भ का आयोजन भी किया था। इस बार ऐसा कुछ तो नहीं हुआ लेकिन इस महाकुम्भ को वर्ष 2012 में हुए धार्मिक समागम से भी भव्य और दिव्य बनाने की सरकार की योजना है और इस बावत हर विभाग को व्यापक दिशा निर्देश दिए गए हैं। उन्हें अभी से कमर कस लेने को कहा गया है। अयोध्या में भव्य कुम्भ कलश की स्थापना का विचार यह इंगित करता है कि इस बार सरकार कुछ बेहद खास करने के मूड में है जो बेहद अलहदा और अभूतपूर्व होगा।

रही बात प्रयागराज के अक्षय वट कॉरिडोर और हनुमान मंदिर कॉरिडोर के निर्माण की तो यह काम वर्ष 2023 से ही आरंभ हो गया था।वर्ष 2024 के नवंबर–दिसंबर तक यह कार्य पूर्ण हो जाना है। सरकार का पूरा जोर इस बात पर है कि प्रयागराज धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक जश्न का केंद्र बने और इस दिशा में उसने मुकम्मल प्रयास भी आरंभ कर दिए हैं। सरकार की पुरज़ोर कोशिश है कि 45 दिन तक यानी 14 जनवरी से 26 फरवरी तक चलने वाला यह महाकुम्भ वर्ष 2012 में हुए महाकुम्भ से करीब तीन गुना बड़ा हो। इसकी परिकल्पना सरकार ने पहले से ही कर रखी है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ये पहले ही संदेश दे दिया है कि इस बार का महाकुम्भ पहले से ज़्यादा भव्य और दिव्य होगा ऐसी उम्मीद है कि इस बार संगम तट पर आस्था की डुबकी लगाने वालों की तादाद 40 करोड़ से अधिक होगी जिसमें देश–दुनिया के आम और खास शामिल होंगे। ऐसी मान्यता है कि महाकुम्भ में देव, दानव, यक्ष, किन्नर गंधर्व, सिद्ध संत तीर्थ राज प्रयाग के दर्शन करने और पूर्ण सलिला गंगा, यमुना और सरस्वती के पावन त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाने आते हैं और अपने को धन्य समझते हैं। ''मेष मकरगत रवि जब होई। तीरथ पतिहिं आव सब कोई।''

महाकुम्भ कितना भव्य और दिव्य होगा, यह इसी बात से जाना जा सकता है कि इस बार महाकुम्भ मेला क्षेत्र 4000 हेक्टेयर में प्रसृत होगा। मेला क्षेत्र को 25 सेक्टरों में बांटा जाएगा। संगम तट से 12 किमी की लंबाई के घाट होंगे। 1850 हेक्टेयर में पार्किंग सुविधा होगी। 450 किमी चकर्ड प्लेट लगाए जाएंगे। नदी के पार जाने आने के लिए 30 पीपे के पुल बन रहे हैं। 67 हजार स्ट्रीट लाइट लगाई जानी है। मेला क्षेत्र में डेढ़ लाख शौचालय बन रहे हैं। श्रद्धालुओं की आवासीय व्यवस्था के लिए डेढ़ लाख टेंट लगाए जाने हैं। गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम की रेती पर लगने वाला महाकुम्भ इस बार बेहद खास और विविधतापूर्ण होगा।

यह महा आयोजन धर्म, अध्यात्म की पराकाष्ठा के लिए अगर जाना जाएगा तो इसमें साहित्य पिपासुओं की पिपासा और उत्कंठा का भी उतनी ही शिद्दत से प्रशमन होगा। महाकुम्भ मेले में आने वाले साहित्य प्रेमी सुमित्रानंदन पंत, मैथिलीशरण गुप्त से लेकर महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर और अज्ञेय जैसे महान लेखकों और कवियों को उनकी मूल आवाज में सुन और देख सकेंगे। यह व्यवस्था इलाहाबाद संग्रहालय की ओर से की जा रही है। सबसे खास बात यह है कि इसमें कवियों के ऐसे वीडियो भी जनता को देखने को मिलेंगे, जो इन्होंने अपने जीवनकाल में गाए और सुनाए होंगे। इसके लिए फिल्म डिवीजन, दूरदर्शन और आकाशवाणी का भी इलाहाबाद संग्रहालय से सहयोग लेने की सरकार की योजना है। वहीं, पर्यटन विभाग देश विदेश से आने वाले लोगों को घर जैसा माहौल और खानपान उपलब्ध कराने के लिए स्थानीय लोगों को अपने मकानों का पेइंग गेस्ट के तौर पर उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। इस निमित्त बड़ी तादाद में प्रयागराज के लोग पर्यटन विभाग में अपना पंजीकरण करा रहे हैं। अच्छे आचरण, स्वच्छता और आवभगत का प्रशिक्षण ले रहे हैं। ज्यादातर लोगों को इस व्यवस्था से जोड़ने के लिए पर्यटन विभाग द्वारा टोल फ्री नंबर और व्हाट्सऐप नंबर भी जारी किया जा रहा है। इससे जहां श्रद्धालुओं को महंगे होटलों के अनावश्यक व्यय भर से निजात मिलेगी, वहीं स्थानीय रहवासियों को भी अपने घर में ही रोजगार मिल सकेगा। उनकी आमदनी में इजाफा होगा। पेइंग गेस्ट के लिए जारी लाइसेंस की वैधता तीन साल की होगी। इस सुविधा के तहत कम से कम दो और अधिकतम पांच कमरे का पंजीकरण कराया जा सकता है। लाइसेंस प्राप्त लोगों को पर्यटन विभाग विशेष प्रशिक्षण भी दे रहा है। इस योजना की सबसे अहम बात यह है कि इसमें किसी प्रकार का कोई वार्षिक शुल्क या कर देने की बाध्यता भी नहीं है। पेइंग गेस्ट की सुविधा देने का किराया भी मकान मालिक ही तय

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ये पहले ही संदेश दे दिया है कि इस बार का महाकुम्भ पहले से ज्यादा भव्य और दिव्य होगा ऐसी उम्मीद है कि इस बार संगम तट पर आस्था की डुबकी लगाने वालों की तादाद 40 करोड़ से अधिक होगी जिसमें देश-दुनिया के आम और खास शामिल होंगे।

करेगा। इसमें पर्यटन विभाग को किसी तरह का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा। मतलब हर्र लगै न फिटकरी रंग चोखा होय।

ग्रीन कॉरिडोर विकसित करने से लेकर प्रयागराज को आध्यात्मिकता के रंग में रंगने का काम यूं तो वर्ष 2019 के कुम्भ से ही आरम्भ हो गया था। शहर की दीवारों को चित्रित करने का काम बड़ी तादाद में कलाकारों ने किया है। 2024 में प्रयागराज के महत्व को बयां करने वाले इस तरह के चित्र कदम–कदम पर यहां आने वाले श्रद्धालुओं का ध्यान आकर्षित करेंगे। महाकुम्भ तो श्रद्धालु बाद में पहुंचेंगे। रैवे स्टेशन, बस अड्डे या हवाई अड्डे पर उतरते ही मार्ग में पड़ने वाली दीवारें उनके मन पर महाकुम्भ की विलक्षणता की छाप छोड़ती नजर आएंगी।

वर्ष 2019 में आयोजित कुम्भ की तरह इस बार भी सरकार का विशेष जोर महाकुंभ में स्वच्छता पर है और इस निमित्त वह लोगों को सामुदायिक शौचालय का उपयोग करने के लिए प्रेरित भी कर रही है। सरकार की योजना है कि 15 दिसंबर, 2024 तक मेला क्षेत्र में डेढ़ लाख से अधिक शौचालय बन कर तैयार हो जाएं। इन शौचालयों के लिए आशय पत्र जारी कर दिया गया है। इसके साथ ही जेट स्प्रे क्लीनिंग सिस्टम भी स्थापित किया जा रहा है। इन सभी शौचालयों में साफ–सफाई और सुरक्षा की निगरानी भी की जाएगी जिसके लिए क्यूआर कोड का इस्तेमाल किया जा रहा है। इतने व्यापक स्तर पर शौचालय और मूत्रालय स्थापित करने के लिए अब तक कुल 55 वेंडर्स को पैनल में शामिल किया जा चुका है। मेला क्षेत्र में सोक पिट वाले 49,000 शौचालय और सेप्टिक टैंक वाले 12 हजार एफआरपी शौचालय स्थापित किए जा रहे हैं। यही नहीं, 10 सीटर वाले 350 मोबाइल शौचालय भी मेला क्षेत्र में उपलब्ध कराने की सरकार की योजना है।

विश्व के सबसे बड़े धार्मिक समागम में शौचालयों की सफाई के लिए पहली बार क्यूआर कोड निगरानी प्रणाली अपनाई जाएगी। शौचालयों की निगरानी का दायित्व 1500 गंगा सेवा दूतों को सौंपा जाना है, जो सुबह–शाम एक–एक शौचालय की जांच करेंगे और आईसीटी ऐप से प्रत्येक शौचालय पर लगे क्यूआर कोड को स्कैन करेंगे और उस ऐप में दिए गए सवालों के जवाब हां या ना में देंगे।

इन सवालों में शौचालय साफ है या नहीं, शौचालय का दरवाजा टूटा तो नहीं है, पर्याप्त पानी की मात्रा है या नहीं, जैसे सवाल होंगे। इन सवालों का जवाब देकर फार्म जमा करते ही यह कंट्रोल रूम पर पहुंच जाएगा। जिन शौचालयों में सफाई मानक के अनुरूप नहीं होगी, उनका विवरण संबंधित वेंडर के पास चला जाएगा और फिर चंद मिनटों में वेंडर द्वारा शौचालय की सफाई कराई जाएगी।

महाकुम्भ में स्नान के दौरान लोगों की सुरक्षा के लिए पहली बार 25 जेट स्की तैनात किए जा रहे हैं। ये हाईटेक जेट स्की पलक झपकते ही पानी में कहीं भी पहुंचने में सक्षम होंगे। इसे जल पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक चाक चौबंद किए जाने की रणनीति से जोड़कर देखा जा रहा है। इन जेट स्की की विशेषता यह है कि ये 70 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से जरूरतमंद तक तत्काल पहुंच जाएंगे।

प्रयागराज महाकुम्भ के बहाने जैव विविधता के संरक्षण और इस निमित्त लोगों को जागरूक करने पर भी सरकार का विशेष फोकस है। महाकुम्भ में एक और दो फरवरी 2025 को बर्ड फेस्टिवल आयोजित करने की दिशा में वन विभाग विशेष रणनीति बना रहा है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य प्रकृति व वन्य जीवों के संरक्षण के प्रति युवाओं में जागरूकता पैदा करना, ईको टूरिज्म को बढ़ावा देना और प्रदेश के जैव विविधता से भरपूर वन्यजीव अभयारण्यों की

जानकारी से लोगों को अवगत कराना है। वन विभाग की इस पहल का लाभ पर्यटन विभाग को मिल सकता है और भविष्य में इस जानकारी के आधार पर वह प्रदेश के जंगल, ऐतिहासिक स्थल और प्राकृतिक सौंदर्य वाले स्थलों का एक सर्किट भी बना सकता है। पक्षी महोत्सव में पक्षी विज्ञान, प्रकृति संरक्षण और वन्यजीव पर्यटन और फोटोग्राफी के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों को आकर्षित करने के लिए इसमें फोटो प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जा रहा है।

महाकुम्भ को देखते हुए जहां परिवहन विभाग ने अपने बस बेड़े को और मजबूत किया है, वहीं रेल महकमे ने भी विशेष व्यस्था कर रखी है। स्पेशल ट्रेनों की संख्या बढ़ाने के साथ ही स्टेशन पर यात्रियों को भाषागत परेशानी न हो, इसलिए प्रयागराज स्टेशन पर देश के अनेक भाषाओं के उद्घोषकों की व्यवस्था की जा रही है।

महाकुम्भ में श्रद्धालुओं की सुविधा को देखते हुए सरकार की योजना प्रयागराज के समग्र कायाकल्प की है। इस निमित्त अक्षयवट कॉरिडोर के सुंदरीकरण योजना को

अमली जामा पहनाया जा रहा है। हालांकि अक्षय वट का दर्शन आम जन के लिए वर्ष 2018 में ही खोल दिया गया था। इसके अतिरिक्त सरस्वती कूप कॉरिडोर, पातालपुरी कॉरिडोर, भारद्वाज कारिडोर, मनकामेश्वर मंदिर कॉरिडोर विकसित किए जा रहे है। इसके अलावा द्वादश माधव मंदिर, पढिला महादेव मंदिर, नागवासुकि मंदिर और हनुमान मंदिर कारिडोर बनाकर सरकार की योजना प्रयागराज आध्यात्मिक, सांस्कृतिक ही नहीं, भौतिक विकास से भी जोड़ना है। अलोपशंकरी मंदिर और प्रयागराज के अन्य नौ प्रमुख मंदिरों का कायाकल्प को शहर के सांस्कृतिक अभ्युदय से जोड़कर देखा जा रहा है

सरकार ने महाकुम्भ के लिए इस वर्ष 6382 करोड़ का बजट पास कर रखा है जबकि वर्ष 2012 में महाकुम्भ का बजट 1152 करोड़ था। सरकार श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य को लेकर जहां बेहद गंभीर है और इस निमित्त जहाँ 9.15 करोड़ की लागत से कुम्भ मेला क्षेत्र में नेत्र कुम्भ चिकित्सालय की स्थापना कर रही है, वहीं यहां की स्वास्थ्य परियोजनाओं पर 125 करोड़ रुपये का परिव्यय कर रही है। शहर के अस्पतालों और मेला मार्ग में स्थित प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को अपडेट कर रही है। प्रयागराज में जहां 43 अस्थायी अस्पतालों की व्यवस्था की जा रही है, वहीं 4 अस्पतालों में 305 बेड रिजर्व किए जा रहे हैं। मोतीलाल नेहरू अस्पताल, सप्रू हॉस्पिटल, राजकीय क्षय रोग चिकित्सालय, डफरिन हॉस्पिटल के लिए 28 करोड़ रुपये की व्यवस्था की जा रही है। शहर की दीवारों को पौराणिकता के रंग में रंगने के साथ ही उसे चतुर्दिक विकास के रंग में रंगने के भी बहुविधि प्रयास धरातल पर उतर रहे हैं। शहर के चारों ओर बढ़ रहे एक्सप्रेस वे तो कमोवेश इसी ओर इशारा करते हैं।

महाकुम्भ मेले में आने वाले साहित्य प्रेमी सुमित्रानंदन पंत, मैथिलीशरण गुप्त से लेकर महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर और अज्ञेय जैसे महान लेखकों और कवियों को उनकी मूल आवाज में सुन और देख सकेंगे। यह व्यवस्था इलाहाबाद संग्रहालय की ओर से की जा रही है। सबसे खास बात यह है कि इसमें कवियों के ऐसे वीडियो भी जनता को देखने को मिलेंगे, जो इन्होंने अपने जीवनकाल में गाए और सुनाए होंगे।

शहर के विभिन्न पार्कों यथा शहीद चंद्रशेखर आजाद पार्क, खुसरो बाग, हाईकोर्ट, सर्किट हाउस राजस्व परिषद के लिए क्रमशः 276.89 लाख रुपये, 59.09 लाख रुपये, 44.18 लाख रुपये और 33.13 लाख रुपये का प्रावधान बताता है कि शहर के ऐतिहासिक महत्व के पार्कों के सुंदरीकरण कर सरकार का ध्यान अपनी विरासत के संरक्षण पर भी है। शहर के प्रमुख पार्कों में बोलार्ड लाइट, एलईडी स्टिंग लाइट, सोलर डेकोरेटिव लाइट और एलईडी रोप लाइट लगाने की सरकार को योजना यह बताने–जताने के प्रयास हैं कि सरकार महाकुम्भ की सफलता में कोई बाधा आने देने के पक्ष में नहीं है और इसके लिए उसने अपने सभी विभागों को मोर्चे पर लगा रखा है और व्यावहारिक धरातल पर इसका असर दिख भी रहा है। ◆

मो. : 7459998968

योगी राज में पूरा विश्व देखेगा डिजिटल महाकुम्भ

–डॉ. सुयश मिश्रा

महाकुम्भ 2025 मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दूरदर्शी नेतृत्व में भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का एक अभूतपूर्व आयोजन बनने जा रहा है। यह महाकुम्भ केवल धर्म और आस्था का केंद्र नहीं होगा, बल्कि डिजिटल नवाचार, स्वच्छता, और पर्यावरण संरक्षण के जरिए भारत की सांस्कृतिक विरासत को विश्व मंच पर एक नई पहचान देने का अवसर भी बनेगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की परिकल्पना के अनुरूप, इस बार का महाकुम्भ तकनीक और परंपरा का ऐसा संगम होगा, जहां श्रद्धालु समुद्र मंथन, कुम्भ की पौराणिक कथाओं और इतिहास को डिजिटल माध्यम से सजीव अनुभव कर सकेंगे। कुम्भ को स्वच्छ, प्लास्टिक मुक्त और हर दृष्टि से प्रेरणादायक बनाने की योजना है, जिससे यह आयोजन न केवल आस्था का केंद्र बने, बल्कि आधुनिक भारत की ताकत और सांस्कृतिक गर्व का प्रतीक भी हो। महाकुम्भ 2025 का आयोजन उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में भारतीय संस्कृति, परंपरा और आध्यात्मिक आस्था का भव्य उत्सव बनने वाला है। यह महापर्व तकनीकी नवाचार, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक समृद्धि का भी अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करेगा। योगी सरकार इसे एक ऐसा आयोजन बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, जो भारतीय विरासत की अद्वितीयता को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित करे।

आधुनिक तकनीक, स्वच्छता, प्लास्टिक मुक्त परिसर और डिजिटल अनुभवों से परिपूर्ण इस महाकुम्भ का उद्देश्य श्रद्धालुओं को न केवल आध्यात्मिकता का अद्वितीय अनुभव देना है, बल्कि इसे यादगार और प्रेरणादायक बनाना भी है। महाकुम्भ को लेकर योगी सरकार की व्यापक दृष्टि का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस बार प्रयागराज में डिजिटल कुम्भ म्यूजियम की स्थापना की जा रही है, जो आधुनिक तकनीक और आध्यात्मिकता का अनूठा संगम होगा। यह संग्रहालय न केवल कुम्भ और महाकुम्भ के धार्मिक महत्व को दर्शाएगा, बल्कि यह डिजिटल माध्यम से श्रद्धालुओं को समुद्र मंथन और 14 रत्नों की पौराणिक कथा का अनुभव प्रदान करेगा। इस म्यूजियम का निर्माण अरैल रोड, नैनी में शिवालय पार्क के पास किया जा रहा है। 10,000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में फैले इस संग्रहालय में एक साथ 2000 से 2500 लोग भ्रमण कर सकेंगे। यह संग्रहालय कुम्भ मेले के इतिहास, उसकी उत्पत्ति और धार्मिक महत्व को नई पीढ़ी के लिए तकनीकी रूप से प्रस्तुत करेगा। डिजिटल कुम्भ

म्यूजियम में समुद्र मंथन की कथा को डिजिटल स्क्रीन और अन्य माध्यमों के जरिए प्रदर्शित किया जाएगा। यहां 14 रत्नों की गैलरी बनाई जाएगी, जो समुद्र मंथन के दौरान प्राप्त हुए दिव्य रत्नों की कहानी को जीवंत रूप में पेश करेगी।

इसके अलावा, कुम्भ के स्वर्णिम इतिहास को भी यहां प्रदर्शित किया जाएगा। यह म्यूजियम हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज के कुम्भ मेलों की विशेषताओं और उनकी सांस्कृतिक विरासत को भी प्रदर्शित करेगा। संग्रहालय में त्रिवेणी संगम की गैलरी, कुंभ के ऐतिहासिक विकास को दर्शाने वाली गैलरी, और आधुनिक समय में कुंभ के बदलते स्वरूप की झलक भी शामिल होगी। इस परियोजना के लिए 21.38 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें से छह करोड़ रुपये पहले ही जारी किए जा चुके हैं।

महाकुम्भ 2025 के आयोजन में लगभग सात हजार करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। इसमें से 5400 करोड़ रुपये सीधे महाकुम्भ के आयोजन पर खर्च होंगे, जबकि 1600 करोड़ रुपये विभिन्न विभागों के बजट से आवंटित किए जाएंगे। वर्ष 2019 के कुम्भ में कुल 2406 करोड़ रुपये खर्च हुए थे, जिसमें से 1200 करोड़ रुपये केंद्र सरकार ने दिये थे। इससे पहले, 2013 के महाकुम्भ में केंद्र सरकार ने प्रदेश को 1142 करोड़ रुपये की मदद दी थी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की परिकल्पना के अनुरूप, इस बार का महाकुम्भ तकनीक और परंपरा का ऐसा संगम होगा, जहां श्रद्धालु समुद्र मंथन, कुम्भ की पौराणिक कथाओं और इतिहास को डिजिटल माध्यम से सजीव अनुभव कर सकेंगे। कुम्भ को स्वच्छ, प्लास्टिक मुक्त और हर दृष्टि से प्रेरणादायक बनाने की योजना है, जिससे यह आयोजन न केवल आस्था का केंद्र बने, बल्कि आधुनिक भारत की ताकत और सांस्कृतिक गर्व का प्रतीक भी हो।

महाकुम्भ को लेकर सरकार की प्रतिबद्धता सिर्फ आध्यात्मिक अनुभव तक सीमित नहीं है। इस आयोजन में श्रद्धालुओं को अधिकतम सुविधाएं देने के लिए व्यापक प्रबंध किए जा रहे हैं। स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण पर विशेष जोर दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि मेला क्षेत्र में प्लास्टिक का उपयोग पूरी तरह से प्रतिबंधित हो। इसके विकल्प के रूप में दोना–पत्तल और जूट के थैलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इन उत्पादों को सब्सिडी के माध्यम से सस्ती दरों पर उपलब्ध कराया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक लोग इनका उपयोग कर सकें। मेला क्षेत्र की सफाई सुनिश्चित करने के लिए विशेष टीमें गठित की जा रही हैं। खुले नालों को पूरी तरह से ढंकने और सॉलिड वेस्ट का उचित प्रबंधन करने के निर्देश दिए गए हैं। सफाई कर्मियों के लिए खाने–पीने की व्यवस्था मेला क्षेत्र में ही सुनिश्चित की जा रही है। इसके अलावा, मेला क्षेत्र में स्थापित कम्युनिटी टॉयलेट्स के प्रवेश द्वार खाली रखने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि वहां किसी को असुविधा न हो।

मेला क्षेत्र को प्लास्टिक मुक्त बनाने के साथ–साथ 'पेंट माई सिटी' अभियान के तहत शहर को सुंदर और आकर्षक बनाने का काम किया जा रहा है। ओवरब्रिज और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर बड़े कलाकारों द्वारा पेंटिंग्स लगाई जा रही हैं, जो कुम्भ के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाती हैं। महाकुम्भ के दौरान प्रयागराज में अस्थायी बस स्टेशनों का निर्माण किया जाएगा, जिससे यातायात व्यवस्था सुचारू हो सके। राज्य सड़क परिवहन निगम के लिए 1.14 करोड़ रुपये की धनराशि स्वीकृत की गई है। इसके अलावा, बक्शी बांध वेंडिंग जोन में सीमेंटेड सड़कों के निर्माण और प्रकाश व्यवस्था के लिए भी करोड़ों रुपये खर्च किए जा रहे हैं।

महाकुम्भ 2025 के आयोजन को डिजिटल युग के अनुरूप ढालने के लिए सरकार विशेष प्रयास कर रही है। डिजिटल साइनेज और मल्टी–लिंगुअल साइनेज लगाने की योजना बनाई गई है, ताकि जो लोग मोबाइल एप का उपयोग नहीं करते, वे भी मेला क्षेत्र में दिशा–निर्देशों और सूचनाओं का लाभ उठा सकें। डिजिटल कुम्भ म्यूजियम इस प्रयास का एक प्रमुख उदाहरण है, जो न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करेगा, बल्कि इसे वैश्विक

मंच पर भी ले जाएगा। महाकुम्भ की तैयारी में सरकार ने लैंड अलॉटमेंट, टेंट सिटी निर्माण, और अन्य ढांचागत विकास के लिए भी विशेष प्रयास किए हैं। टेंट सिटी में सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी और वहां दी जाने वाली सभी सामग्री नई होगी। मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं के लिए भोजन, आराम और अन्य सुविधाओं का प्रबंध उच्च स्तर पर किया जा रहा है।

महाकुम्भ केवल धार्मिक आयोजन नहीं है, यह एक सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक अवसर भी है। प्रयागराज में आयोजित यह आयोजन स्थानीय व्यापारियों, कारीगरों और कलाकारों के लिए एक बड़ा अवसर प्रदान करता है। दोना–पत्तल बनाने वाले कारीगरों को मेला क्षेत्र में स्टॉल प्रदान किए जा रहे हैं, जिससे उनके उत्पादों को बढ़ावा मिल सके। महाकुम्भ 2025 न केवल आध्यात्मिकता और संस्कृति का पर्व है, बल्कि यह आधुनिक तकनीक और परंपरागत मूल्यों का संगम भी है। यह आयोजन भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को न केवल देश में, बल्कि विश्व स्तर पर प्रस्तुत करने का एक अद्भुत अवसर है। सरकार और प्रशासन की ओर से की जा रही व्यापक तैयारियां इस महाकुम्भ को इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

कुम्भ के स्वर्णिम अतीत का डिजिटली अनुभव

अरैल मार्ग पर 40,000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में प्रस्तावित डिजिटल कुम्भ म्यूजियम का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। प्रयागराज विकास प्राधिकरण द्वारा डिजिटल कुम्भ म्यूजियम के लिए ईओआई (एक्सप्रेशन ऑफ इंट्रेस्ट) आमंत्रित किए गए हैं, कई बिडर्स ने अपनी योजनाएं प्रस्तुत की हैं। इस म्यूजियम में वर्चुअल रियलिटी (वीआर) के माध्यम से अखाड़ों, समुद्र मंथन से संबंधित गैलरी, त्रिवेणी संगम गैलरी, और कुम्भ के इतिहास तथा आध्यात्मिकता को दर्शाती गैलरी का निर्माण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, कुम्भ की उत्पत्ति और पौराणिक गाथाओं से जुड़ी गैलरी, कुम्भ मेले का ऐतिहासिक विकास, प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन के कुम्भ मेले से संबंधित गैलरियां, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व की गैलरी और 21वीं सदी में कुंभ मेला जैसे विषयों पर भी गैलरी विकसित की जाएंगी। म्यूजियम परिसर में पार्किंग सुविधाएं, सांस्कृतिक हाट, फूड प्लाजा और भू–दृश्य जैसे विकास कार्य भी किए जा रहे हैं। डिजिटल कुम्भ म्यूजियम आधुनिक महाकुम्भ का वास्तविक अनुभव प्रदान करेगा। इस म्यूजियम में उच्च गुणवत्ता वाली हीटिंग, वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग प्रणाली के साथ ऑडियो–वीडियो रूम जैसी सुविधाएं होंगी। म्यूजियम में विभिन्न आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दर्शन से संबंधित गैलरी शामिल की जाएंगी, जिनमें कुम्भ मेला, आध्यात्मिकता, समुद्र मंथन और अखाड़ों पर आधारित गैलरी प्रमुख होंगी। यहां फूड प्लाजा और यादगार वस्तुओं की दुकानें भी होंगी, जहां आगंतुक कुम्भ मेले से जुड़ी साहित्यिक सामग्री और उत्पाद खरीद सकेंगे। इसके अतिरिक्त, अक्षयवट नामक सांस्कृतिक हाट, गैलरी, थिएटर (अमृत कलश) और गेस्ट हाउस जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी, जो इस अनुभव को और भी विशेष बनाएंगी।

डिजिटल माध्यम से संगम के दर्शन

डिजिटल कुम्भ म्यूजियम के डिजाइन में संगम के

दर्शन को पूरी तरह से डिजिटल माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा। प्रवेश द्वार पर तीन प्रमुख नदियों, गंगा, यमुना और सरस्वती को अलग–अलग रंगों के माध्यम से दिखाया जाएगा, साथ ही स्टेटिक ग्राफिक्स का भी उपयोग किया जाएगा। इसके बाद, व्याख्या गैलरी में प्रयागराज के मैप को बड़े स्क्रीन पर टच के जरिए एक्सप्लोर किया जा सकेगा, जिसमें शहर के इतिहास के साथ–साथ वर्तमान के प्रयागराज की जानकारी भी दी जाएगी। समुद्र मंथन गैलरी में फ्लोर प्रोजेक्शन के जरिए समुद्र मंथन का दृश्य प्रस्तुत किया जाएगा। अखाड़ा गैलरी में देशभर के अखाड़ा कल्चर को दर्शाया जाएगा। टेम्पोरल सिटी में वीडियो वॉल और त्रिवेणी संगम गैलरी में फ्लोर, वॉल और सीलिंग पर एक साथ तीनों का सम्मिलन होगा।

300 करोड़ से अधिक की लागत

इस परियोजना पर 300 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए जाएंगे। इस राशि का उपयोग प्रमुख धार्मिक स्थलों जैसे भारद्वाज आश्रम, द्वायस माथन मंदिर, नागवासुकी, दशाश्वमेध, मनकामनेर, तोपकारी, जिला महादेव मंदिर, पंचकोसी परिक्रमा, पथकाटेश्वर महादेव, बल्याणी मंदिर, तक्षक तीर्थ, अक्षरफाट, पातालपुरी मंदिर, हनुमान मंदिर फ्लोटिंग जेटी, और सौंदर्यीकरण के लिए किया जाएगा।

डिजिटल तकनीक का प्रभाव

तकनीक का प्रभाव अब धर्म और अध्यात्म पर भी गहरा हो रहा है। 2025 में होने वाला महाकुम्भ मेला इस बदलाव का महत्वपूर्ण उदाहरण बनेगा। यह आयोजन न केवल धार्मिक दृष्टि से विशेष होगा, बल्कि इसमें डिजिटल तकनीक का भी शानदार उपयोग किया जाएगा। श्रद्धालुओं के अनुभव को सरल और आधुनिक बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और चैटबॉट तकनीक का उपयोग किया जाएगा। उत्तर प्रदेश सरकार ने 'कुम्भ सहायक' नामक एक विशेष चैटबॉट लॉन्च करने का निर्णय लिया है, जो श्रद्धालुओं को महाकुम्भ मेले से संबंधित सभी जानकारियां और सुविधाएं प्रदान करेगा, जिससे उनका अनुभव और भी सहज और प्रभावी हो सकेगा।

करोड़ों श्रद्धालुओं का मार्गदर्शन करेगा 'कुम्भ सहायक' चैटबॉट

महाकुम्भ 2025 के प्रमुख आकर्षणों में से एक होगा 'कुम्भ सहायक' एआई आधारित चैटबॉट, जिसका उद्देश्य लाखों श्रद्धालुओं को डिजिटल माध्यम से कुम्भ मेले से जुड़ी हर प्रकार की जानकारी उपलब्ध कराना है। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि यह चैटबॉट 10 से अधिक भाषाओं में संवाद कर सकता है, जिससे न केवल भारत के विभिन्न राज्यों से, बल्कि विदेशों से आने वाले श्रद्धालुओं को भी कोई भाषा संबंधी परेशानी नहीं होगी। यह एप्लिकेशन महाकुम्भ ऐप और व्हाट्सएप पर उपलब्ध होगा, ताकि अधिक से अधिक श्रद्धालु इसका लाभ उठा सकें। यह चैटबॉट केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं है, बल्कि श्रद्धालुओं को उनके गंतव्य तक पहुंचाने में भी मार्गदर्शन करेगा। इसमें गूगल नेविगेशन का विकल्प शामिल किया गया है, जिससे स्नान घाटों, अखाड़ों, मंदिरों और अन्य प्रमुख स्थलों तक पहुंचना अत्यंत सरल हो जाएगा। इसके अतिरिक्त, व्यक्तिगत जीआईएफ और इण्टरएक्टिव फीचर्स के माध्यम से यह श्रद्धालुओं को एक अनोखा और व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करेगा। ◆

मो. : 8924856004

महाकुम्भ की तैयारियां : सांस्कृतिक आयोजन

—दिनेश कुमार गुप्ता

उत्तर प्रदेश धार्मिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ राज्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को अत्यंत प्रोत्साहित कर रहे हैं। इसके अंतर्गत योगी सरकार ने महाकुम्भ के भव्य आयोजन के लिए 2,600 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया है। उन्होंने महाकुम्भ के सफल आयोजन के लिए संबंधित अधिकारियों को विशेष निर्देश दिए हैं। प्रशासन द्वारा सभी आवश्यक तैयारियां की जा रही हैं।

उल्लेखनीय है कि प्रयागराज में 13 जनवरी, 2025 को पौष पूर्णिमा स्नान के साथ कुम्भ मेले का शुभारंभ होगा तथा 26 फरवरी, 2025 को महाशिवरात्रि के अंतिम स्नान के साथ इसका समापन होगा। शाही स्नान 14 जनवरी को मकर संक्रांति पर, 29 जनवरी को मौनी अमावस्या पर, 3 फरवरी को बसंत पंचमी पर, 12 फरवरी को माघी पूर्णिमा पर तथा 26 फरवरी को महाशिवरात्रि पर होगा।

महाकुम्भ का महत्व

प्रयागराज हिंदुओं का अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यहां गंगा, यमुना एवं सरस्वती का अद्‌भुत संगम होता है जिसे अत्यंत पवित्र माना जाता है। यहां कुम्भ मेले का आयोजन होता है। कुम्भ मेले के अवसर पर करोड़ों श्रद्धालु प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक में स्नान करके पुण्य अर्जित करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष तथा प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के मध्य छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुम्भ मेले का आयोजन होता है। कुम्भ का शाब्दिक अर्थ घड़ा एवं मेले का अर्थ एक स्थान पर एकत्रित होना है। कुम्भ मेला अमृत उत्सव के नाम से भी प्रसिद्ध है।

खगोल गणनाओं के अनुसार कुम्भ मेला मकर संक्रांति के दिन प्रारंभ होता है। उस समय सूर्य एवं चंद्रमा, वृश्चिक राशि में तथा वृहस्पति, मेष राशि में प्रवेश करते हैं। इस दिवस को अति शुभ एवं मंगलकारी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुल

जाते हैं। इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति होती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु अमृत से भरा हुआ कुम्भ लेकर जा रहे थे तभी असुरों ने उन पर आक्रमण कर दिया। अमृत प्राप्ति के लिए देव एवं दानवों में परस्पर बारह दिन तक निरंतर युद्ध होता रहा। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के समान होते हैं। इसलिए कुम्भ भी बारह होते हैं। इनमें से चार कुम्भ पृथ्वी पर होते हैं तथा शेष आठ कुम्भ देवलोक में होते हैं। देव एवं दानवों के इस संघर्ष के दौरान भूमि पर अमृत की चार बूंदें गिर गईं। ये बूंदें प्रयाग, हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन में गिरीं। जहां–जहां अमृत की बूंदें गिरीं वहां पर तीर्थ स्थल का निर्माण किया गया। तीर्थ उस स्थान को कहा जाता है जहां मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस प्रकार जहां अमृत की बूंदें गिरीं, उन स्थानों पर तीन–तीन वर्ष के अंतराल पर बारी–बारी से कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है। इन तीर्थों में प्रयाग को तीर्थराज के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहां तीन पवित्र नदियों गंगा, यमुना एवं सरस्वती का संगम होता है। इन नदियों में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

प्रयागराज हिंदुओं का अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यहां गंगा, यमुना एवं सरस्वती का अद्‌भुत संगम होता है जिसे अत्यंत पवित्र माना जाता है। यहां कुम्भ मेले का आयोजन होता है। कुम्भ मेले के अवसर पर करोड़ों श्रद्धालु प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक में स्नान करके पुण्य अर्जित करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष तथा प्रयाग में दो कुम्भ पर्वों के मध्य छह वर्ष के अंतराल में अर्धकुम्भ मेले का आयोजन होता है। कुम्भ का शाब्दिक अर्थ घड़ा एवं मेले का अर्थ एक स्थान पर एकत्रित होना है। कुम्भ मेला अमृत उत्सव के नाम से भी प्रसिद्ध है।

भारत में महाकुम्भ धार्मिक स्तर पर अत्यंत पवित्र एवं महत्वपूर्ण आयोजन है। इसमें लाखों–करोड़ों श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं। इस बार के महाकुम्भ में लगभग 40 करोड़ तीर्थयात्रियों के सम्मिलित होने की संभावना व्यक्त की जा रही है। लगभग डेढ़ मास तक संचालित होने वाले इस आयोजन में तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए व्यवस्था की जाती है। उनके लिए टेंट लगाए जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि एक छोटी सी नगरी अलग से बसा दी गई है। यहां तीर्थयात्रियों के लिए मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। यह आयोजन प्रशासन, स्थानीय प्राधिकरणों एवं पुलिस की सहायता से आयोजित किया जाता है। इस मेले में दूर–दूर से साधु–संत आते हैं। कुम्भ योग की गणना कर स्नान का शुभ मुहूर्त निकाला जाता है। स्नान से पूर्व मुहूर्त में नागा साधु स्नान करते हैं। इन साधुओं के शरीर पर भभूत लिपटी रहती है। उनके बाल लंबे होते हैं तथा वे वस्त्रों के स्थान पर शरीर पर मृगचर्म धारण करते हैं। स्नान के लिए विभिन्न नागा साधुओं के अखाड़े भव्य रूप से शोभा यात्रा की भांति संगम तट पर पहुंचते हैं। ये साधु मेले का आकर्षण का केंद्र होते हैं।

मंदिरों का जीर्णोद्धार

प्रदेश की योगी सरकार महाकुम्भ से पूर्व ही प्रयागराज के ऐतिहासिक मंदिरों का जीर्णोद्धार करवा रही है। इसके साथ–साथ मंदिरों का नवीनीकरण भी किया जा रहा है। पर्यटन विभाग, स्मार्ट सिटी एवं प्रयागराज विकास प्राधिकरण जीर्णोद्धार एवं नवीनीकरण को शीघ्र से शीघ्र पूर्ण करने के लिए मिलकर कार्य कर रहे हैं। मेला प्रशासन श्रद्धालुओं और पर्यटकों की आस्था एवं सुविधा को प्राथमिकता दे रहा है, जिससे उन्हें स्मरणीय अनुभव प्राप्त हो सके तथा वे यहां से प्रसन्नतापूर्वक वापस जाएं।

पर्यटन विभाग जिन कॉरिडोर एवं नवीनीकरण परियोजनाओं की देखरेख कर रहा है, उनमें से मुख्य रूप से

भारद्वाज कॉरिडोर, मनकामेश्वर मंदिर कॉरिडोर, द्वादश माधव मंदिर, पड़िला महादेव मंदिर, अलोप शंकरी मंदिर आदि सम्मिलित हैं। स्मार्ट सिटी परियोजना के अंतर्गत अक्षयवट कॉरिडोर, सरस्वती कूप कॉरिडोर एवं पातालपुरी कॉरिडोर सम्मिलित हैं। प्रयागराज विकास प्राधिकरण नागवासुकी मंदिर का नवीनीकरण कार्य एवं हनुमान मंदिर कॉरिडोर का कार्य करवा रहा है।

हरित क्षेत्र का विस्तार

महाकुम्भ मेले के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश को हरभरा बनाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य में हरित क्षेत्र के विस्तार के लिए संपूर्ण राज्य में 2.71 लाख पौधे लगाने का निर्देश दिया है। इसके लिए वन विभाग, नगर निगम एवं प्रयागराज विकास प्राधिकरण मिलकर कार्य कर रहे हैं तथा संयुक्त रूप से राज्यभर में अभियान चला रहे हैं। वन विभाग द्वारा 29 करोड़ रुपये की लागत से 1.49 लाख पौधे लगाए जाएंगे। वन विभाग संपूर्ण जिले में सड़कों के किनारे पौधे लगाएगा। नगर में आने वाली मुख्य सड़कों पर सघन पौधरोपण किया जा रहा है। सड़कों के किनारे नीम, पीपल, कदंब एवं अमलतास आदि के पौधे लगाए जा रहे हैं। इस अभियान के अंतर्गत सरस्वती हाईटेक सिटी में 20 हेक्टेयर में 87 हजार पौधे लगाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त वन विभाग नगर के कुछ क्षेत्रों में पौधे लगाएगा। नगर में हरित पट्टी बनाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाकुम्भ के लिए प्रयागराज को स्वच्छता के मॉडल के रूप में स्थापित करने का भी निर्देश दिया है। वन विभाग, नगर निगम एवं प्रयागराज विकास प्राधिकरण द्वारा संपूर्ण क्षेत्र में एक मेगा पौधरोपण अभियान चलाया जा रहा है।

प्राकृतिक उत्पादों को प्रोत्साहन

योगी सरकार के मार्गदर्शन में कुम्भ मेला प्रशासन के सभी विभाग मिलकर महाकुम्भ के लिए स्वच्छता पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। क्षेत्रों को पॉलीथिन से मुक्त रखने का भी

प्रयास किया जा रहा है। इसके अंतर्गत महाकुम्भ में सिंगल यूज्ड प्लास्टिक पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेगा। मेले में प्राकृतिक उत्पाद जैसे दोना, पत्तल, कुल्हड़ एवं जूट व कपड़े के थैलों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रयागराज मेला प्राधिकरण की ओर से महाकुम्भ में प्राकृतिक उत्पादों का प्रयोग करने के स्टॉल लगाने की योजना है। महाकुंभ के दौरान दुकानदारों को भी प्राकृतिक उत्पादों का ही प्रयोग करने का निर्देश जारी किया गया है।

स्वच्छता पर बल

महाकुम्भ मेले में श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की बड़ी संख्या में आने के दृष्टिगत क्षेत्र में डेढ़ लाख शौचालय एवं मूत्रालय स्थापित किए जा रहे हैं। इनको स्वच्छ बनाए रखने के लिए भी व्यापक तैयारी की गई है। इसमें तकनीकी का भी प्रयोग किया जा रहा है। इन सभी की निगरानी का दायित्व 1500 गंगा सेवा दूतों को सौंपा गया है। वे प्रातः एवं सायं इनकी जांच करेंगे। क्यूआर कोड से स्वच्छता की मॉनीटरिंग की जा रही है। यह ऐप बेस्ड फीडबैक देगा, जिसके माध्यम से शीघ्र से शीघ्र सफाई सुनिश्चित की जाएगी। इस बार मैनुअल शौचालय स्वच्छ करने की आवश्यकता नहीं होगी, अपितु जेट स्प्रे क्लीनिंग सिस्टम से कुछ क्षणों में पूरी तरह उन्हें स्वच्छ कर दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त सेसपूल ऑपरेशन प्लान भी तैयार किया गया है, जिसके माध्यम से मेला क्षेत्र में स्थापित शौचालयों के सेप्टिक टैंक को रिक्त किया जाएगा। सेप्टिक टैंक रिक्त करके यहां से वेस्ट को एसटीपी प्लांट या अन्य स्थान पर स्थानांतरित किया जाएगा।

यातायात सुविधा

योगी आदित्यनाथ की सरकार प्रदेश में आने वाले श्रद्धालुओं की प्रत्येक सुविधा का ध्यान रख रही है। इसलिए यातावात की भी समुचित व्यवस्था की जा रही है। प्रयागराज आने वाली बसों, रेलगाड़ियों एवं वायुयान की संख्या में वृद्धि की जा रही है। महाकुम्भ के लिए रेलवे द्वारा लगभग 1200 रेलगाड़ियां तथा परिवहन विभाग द्वारा सात हजार बसों का संचालन किया जाएगा।

तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए योगी सरकार ने केंद्र की मोदी सरकार ने महाकुम्भ के दौरान प्रयागराज में प्रवेश करने पर सात टोल प्लाजा को टैक्स फ्री करने का अनुरोध किया था, जिसे स्वीकृत कर लिया गया है। महाकुम्भ के दौरान 45 दिनों तक चित्रकूट मार्ग पर उमापुर टोल प्लाजा, रीवा राजमार्ग पर गन्ने टोल प्लाजा, मिर्जापुर मार्ग पर मुंगारी टोल प्लाजा, वाराणसी मार्ग पर हंडिया टोल प्लाजा, लखनऊ राजमार्ग पर अंधियारी टोल प्लाजा, अयोध्या राजमार्ग पर मऊआइमा टोल प्लाजा निःशुल्क रहेगा। यहां से प्रवेश करने वाले यात्रियों से कोई भी टोल नहीं लिया जाएगा। यह सुविधा 13 जनवरी से 26 फरवरी तक रहेगी। यद्यपि यह सुविधा माल वाहक व्यवसायिक वाहनों को नहीं मिलेगी। इस समयावधि में सरिया, सीमेंट, बालू एवं इलेकट्रॉनिक्स सामान से भरे वाहनों से टोल लिया जाएगा। किंतु व्यवसायिक पंजीकृत जीप एवं कार आदि से भी टोल नहीं लिया जाएगा। ◆

• मो. : 941267475

इस बार कुम्भ में नहीं बिछड़ेंगे 'अपने'

–जितेन्द्र शुक्ला

60 से लेकर 80 के दशक तक यानि बीस साल तक बॉलीवुड की फिल्मों में यही दिखाया जाता था कि मेले में 'अपने' बिछड़ गए और बरसों–बरस बाद मिले। किसी फिल्म में बड़ा भाई अपने छोटे भाई से बिछड़ जाता था तो किसी में पति अपनी पत्नी को मेले में खो देता था। इसी चित्रण को आधार बनाकर फिल्म का कथानक लिखा जाता था। लेकिन इस बार यानि अगले वर्ष 2025 में उत्तर प्रदेश की संगम नगरी प्रयागराज में होने वाले महाकुम्भ के दौरान मिलने–बिछड़ने जैसी कहानियां इतिहास का अंग नहीं बनने वाली हैं। साफ है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने 'फिल्मी महाकुम्भ' में लोगों के खोने और फिर सालों बाद मिलने की इस धारणा को तोड़ने की पूरी तैयारी कर ली है। महाकुम्भ–2025 के लिए उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने अत्याधुनिक खोया–पाया प्रणाली शुरू करने की तैयारी की है। कुम्भ मेले में अब अगर कोई अपनों से बिछड़ेगा तो उसे जल्द से जल्द परिवार से मिला दिया जाएगा। इसके अलावा राज्य सरकार ने 'सुरक्षित महाकुम्भ' हो, इस दिशा में भी अभूतपूर्व सुरक्षा का खाका खींचा है।

दरअसल, प्रयागराज मेला प्राधिकरण और पुलिस विभाग ने मिलकर इस बार के महाकुम्भ मेले में उच्च तकनीक से युक्त खोया–पाया पंजीकरण प्रणाली लागू करने की तैयारी की है। यह नई पहल सुरक्षा, जिम्मेदारी और तकनीक का अद्भुत संगम है, जो महाकुम्भ मेले को सुरक्षित और सुखद अनुभव बना देगी। इसमें कहा गया है कि अब कुम्भ मेले में हर व्यक्ति का ध्यान रखा जाएगा, कोई भी अब अपनों से नहीं बिछड़ेगा और ऐसा हुआ भी तो वह जल्द से जल्द अपने परिवार से मिल सकेगा। अब इन 'हाई–टेक' खोया–पाया केंद्रों में खोए हुए व्यक्तियों का डिजिटल पंजीकरण होगा, जिससे उनके परिवार या मित्र आसानी से उन्हें खोज सकेंगे। इसके मुताबिक, साथ ही सभी लापता व्यक्तियों के लिए केंद्रों पर उद्घोषणा की जायेगी और खोया–पाया केंद्रों में हर खोये हुए व्यक्ति का पंजीकरण तुरंत किया जाएगा और उसकी जानकारी को अन्य केंद्रों और सोशल मीडिया मंचों जैसे फेसबुक और एक्स पर भी

प्रसारित की जाएगी। साफ है कि यह व्यवस्था महाकुम्भ मेले को न केवल सुरक्षित बनाएगी, बल्कि परिवारों को जल्दी और आसानी से अपने प्रियजनों से जोड़ने का काम भी करेंगी। अगर कोई व्यक्ति कुम्भ मेले में अपनों से बिछड़ जाता है तो सुरक्षित, व्यवस्थित और जिम्मेदार प्रणाली के तहत उसका ख्याल रखा जाएगा।

महाकुम्भ-2025 के लिए उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने अत्याधुनिक खोया-पाया प्रणाली शुरू करने की तैयारी की है। कुम्भ मेले में अब अगर कोई अपनों से बिछड़ेगा तो उसे जल्द से जल्द परिवार से मिला दिया जाएगा। इसके अलावा राज्य सरकार ने 'सुरक्षित महाकुम्भ' हो, इस दिशा में भी अभूतपूर्व सुरक्षा का खाका खींचा है।

वहीं, महाकुम्भ 2025 में सुरक्षा अभेद्य बनाया गया है। इसके लिए योगी सरकार ने फुल प्रूफ प्लान बना लिया है। तय किया गया है कि कुम्भ में सुरक्षा के 7 स्तर होंगे। इसके अलावा कुम्भ क्षेत्र को 10 जोन, 25 सेक्टर, 56 थानों और 155 चौकियों में बांटा जाएगा। सुरक्षा व्यवस्था ऐसी रहेगी कि इसमें हर लेवल पर चेकिंग होगी और निगरानी तय की जाएगी। सरकार ने किसी भी असुविधा या खतरे को टालने के लिए यह फैसला लिया है। कुम्भ की सुरक्षा में 37 हजार से अधिक पुलिसकर्मी तैनात होंगे। इसमें 23 हजार मेले की सुरक्षा देखेंगे। 6 हजार से अधिक कर्मी कमिश्नरेट में तैनात रहेंगे। जीआरपी के 7 हजार कर्मी प्रमुख स्टेशनों और रेल मार्गों पर होंगे। महिला सुरक्षा के लिए 1378 महिला कर्मियों को भी तैनात किया जाएगा। कुम्भ की अवधि में कोई आतंकी घटना न हो इसके लिए इंटेलिजेंस यूनिट सक्रिय रहेगी। अलग से एक कमांड सेंटर भी बनाया जाएगा। एआई से लैस सीसीटीवी होंगे। महाकुम्भ में नागरिक पुलिस, महिला पुलिस, यातायात पुलिस, सशस्त्र पुलिस, घुड़सवार पुलिस, परिवहन शाखा, एलआईयू, जल पुलिस, होमगार्ड भी तैनात रहेंगे।

वहीं दूसरी ओर टेक्नोलॉजी के जरिये सुरक्षा व्यवस्था को और भी पुख्ता करने की तैयारी चल रही है। इसमें सबसे अहम रोल एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) आधारित सीसीटीवी कैमरे निभाएंगे। महाकुम्भ के दौरान चप्पे चप्पे में निगरानी के लिये पूरे शहर में 2500 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे लगाये जायेंगे। इनमें एआई आधारित सीसीटीवी कैमरे भी शामिल हैं, जिन्हे सीधे कंट्रोल रूम से जोड़ा जाएगा। मेला अधिकारी विजय किरण आनंद के मुताबिक मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को 15 दिसंबर तक सारे काम पूरे करने के निर्देश दिये थे। साथ ही सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता करने के निर्देश दिये थे ताकि महाकुम्भ के दौरान श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न हो। इसके बाद विकास कार्यों ने और तेज रफ्तार पकड़ ली है। योगी के निर्देश पर पूरे शहर में सुरक्षा व्यवस्था को अभेद्य करने के लिए हाईटेक 2,750 सीसीटीवी लगाने का काम चल रहा है। वहीं कई प्रमुख स्थानों और मेला क्षेत्र में एआई आधारित सीसीटीवी कैमरे भी लगाए जाएंगे। अब तक एक हजार सीसीटीवी को विभिन्न स्थानों पर इंस्टॉल भी किया जा चुका है।

वहीं इन सभी कैमरों को कंट्रोल रूम से सीधा जोड़ा जाएगा। यहां से आने–जाने वाले श्रद्धालुओं पर सीधी नजर रखी जाएगी। इसके अलावा शहर के विभिन्न स्थानों पर 80 वीएमडी टीवी स्क्रीन को लगाया जाएगा। इसके जरिये विभिन्न महत्वपूर्ण जानकारियों को डिस्पले किया जाएगा। महाकुंभ में करीब 25 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। ऐसे में मेला क्षेत्र, मेला को जाने वाले मार्ग और शहर के प्रमुख मार्गों पर क्राउड मैनेजमेंट सिस्टम वाले एआई आधारित रियल टाइम अलर्ट सीसीटीवी भी लगाए जा रहे हैं। इसकी मॉनीटरिंग के लिए कंट्रोल रूम में अलग से व्यवस्था की जा रही है।

वहीं महाकुम्भ मेला हेल्पलाइन 1920 के लिए डेडिकेटेड 50 सीटर कॉल सेंटर स्थापित किया जा रहा है, जहां पर 24 घंटे पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे। यह सभी पल–पल की अपडेट अधिकारियों के साथ शेयर करेंगे। वहीं कोई संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु या फिर अगर किसी स्थान पर ज्यादा भीड़ एकत्रित होने पर संबंधित चौकी और थाने को सूचना देंगे ताकि वहां से भीड़ को कम किया जा सके। साथ

ही भीड़ को एक जगह एकत्रित होने से रोकने के लिए रियल टाइम अलर्ट सीसीटीवी अहम रोल निभाएगा। श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए पार्किंग पर खासा फोकस किया जा रहा है। यहां पर पांच लाख से अधिक वाहनों के लिए पार्किंग की व्यवस्था की जा रहा है। इन स्थानों पर भी सुरक्षा के कड़े इंतजाम किये जा रहा हैं। यहां पर बेहतर पार्किंग प्रबंधन के लिए एआई आधारित पार्किंग प्रबंधन प्रणाली अपनायी जाएगी। इसके जरिये हर वाहन पर नजर रखी जाएगी।

दुनिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम को सुरक्षा की दृष्टि से सफल बनाने के लिए जल पुलिस, पीएसी, स्वास्थ्य कर्मियों के साथ एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की कई टीमें मिलकर काम कर रही हैं। इसी क्रम में महाकुम्भ के दौरान 220 हाईटेक डीप ड्राइवर समेत एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के सुरक्षाकर्मी 700 नाव पर सवार होकर 24 घंटे अलर्ट मोड पर रहेंगे। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर देश–विदेश से महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं की पुख्ता सुरक्षा के लिए हर तरह के इंतजाम किए जा रहे हैं। इसके चलते गोवा, कोलकाता, महाराष्ट्र समेत देश के सबसे चुनिंदा जल पुलिस के जवान प्रयागराज में तैनात किए जा रहे हैं। स्नानार्थियों और साधु–संतों के साथ स्नान के दौरान कोई भी अनहोनी न होने पाए, इसके लिए पहली बार इतनी बड़ी संख्या में हाईटेक डीप ड्राइवरों की ड्यूटी लगाई जा रही है।

महाकुम्भ के दौरान 180 डीप ड्राइवर्स की तैनाती की गई है, जो देश के विभिन्न हिस्सों से यहां आ रहे हैं, जबकि 39 डीप ड्राइवर्स पहले से ही यहां तैनात हैं। इस तरह कुल 220 डीप ड्राइवर्स हर वक्त पानी में सुरक्षा के लिए अलर्ट मोड पर रहेंगे। इसके अलावा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों का भी इसमें सहयोग लिया जा रहा है। स्थानीय केवट भी सहयोग में रहेंगे, जो बिना गैस सिलेंडर के भी 40 फीट गहराई तक जाने में सक्षम हैं। यही नहीं, स्नानार्थियों की मदद के लिए 10 कंपनी पीएसी, 12 कंपनी एनडीआरएफ और 6 कंपनी एसडीआरएफ भी तैनात की जा रही है, जो किसी भी विषम परिस्थिति से निपटने में सक्षम होगी। ◆

मो. : 9415158902

''दुनिया देखेगी, महाप्रबन्धन का अविस्मरणीय आयोजन

महाकुम्भ-2025 में बनेंगे चार गिनीज़ वर्ल्ड रिकार्ड

–रूद्रेश घिल्डियाल

आस्था के कुम्भ में डुबकी लगाने को उत्सुक करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने व्यापक व्यवस्थाएं की हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाकुम्भ–2025 में चार गिनीज बुक वर्ल्ड रिकार्ड बनाने जा रहे हैं। सतत् अनुश्रवण को प्रभावी व्यवस्था के साथ–साथ मुख्यमंत्री जी ने शासन/प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कई बैठकें कर, उन्हें हिदायत दी कि महाकुम्भ–2025 उनकी शीर्ष प्राथमिकता है। दुनिया के इस सबसे बड़े मेले को ऐतिहासिक बनाने के लिए कोई कोताही बर्दाश्त नहीं की जायेगी। मुख्यमंत्री के दिशा–निर्देशों का प्रतिफल है कि समय से पूर्व सभी तैयारियाँ पूरी कर ली गई हैं। खास बात यह है कि युद्ध स्तर पर हो रहे निर्माण कार्यो में गुणवत्ता के साथ किसी तरह का समझौता नहीं किया गया। प्रथम बार ''थर्ड पार्टी'' गुणवत्ता की जांच की व्यवस्था की गई। महाकुम्भ–2025 में संगम नगरी की दिव्यता और भव्यता तो देखते ही बनेगी। वाटर स्पोट्स, लेजर शो, डिजीटल कुम्भ म्यूजियम समेत पहली बार कई ऐसे प्रबन्ध किये गये जा रहे हैं, जो श्रद्धालुओं को आकर्षित करेंगे, साथ ही आधुनिकता के साथ अध्यात्म का दर्शन संगम की रेती पर हो सकेगा। लगभग आठ हजार करोड़ रूपये की लागत से 430 परियोजनाओं से प्रयागराज को भव्य और सुन्दर बनाया जा रहा है।

कुम्भ–2019 में पूरी दुनिया प्रयागराज की ओर आकर्षित हुई थी। उस दौरान करीब 25 करोड़ श्रद्धालुओं ने

संगम में स्नान किया था। इस बार महाकुम्भ–2025 में लगभग 50 करोड़ श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त केन्द्र और प्रदेश सरकार की ओर से ही सारे प्रबन्ध किये जा रहे हैं। शहर से लेकर संगम तक सड़कें, चौराहे, मुख्य मार्ग के किनारे घरों की दीवारों, संस्थानों, प्रतिष्ठानों व उनकी चहारदीवारी पर कलाकृतियां बनाई जा रही हैं। सभी 9 रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों से लेकर एयरपोर्ट तथा यात्री सुविधाओं का विकास हो रहा है। यही 'ए' ग्रेड की यात्री सुविधायें बढ़ायी जा रही हैं। महाकुम्भ–2025 में पर्यटकों, साधु–सन्तों एवं श्रद्धालुओं को उत्कृष्ट सुरक्षा तथा विश्व स्तरीय सुविधायें उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र और राज्य सरकार के 26 विभागों को लगाया गया है। पावन संगम तट पर स्थित पवित्र अक्षयवट की भव्यता इस महाकुम्भ में दिखेगी। अक्षयवट कॉरिडोर का निर्माण कराया जा रहा है। इसके साथ ही किले में घुसने के लिए स्नान घाट की ओर प्रवेश द्वार और निकास द्वार बनाया गया है। अक्षयवट के चबूतरे में राजस्थान के उच्च गुणवत्ता वाले पत्थरों व गुजरात की विशेष टाइल्स लगाई जा रही है। गुजरात एवं राजस्थान के मजदूरों से कार्य लिया जा रहा है।

मा. योगी सरकार ने पर्यटकों की सुरक्षा, सुविधा व सुव्यवस्था के वैश्विक मानकों को आधार बनाकर महाकुम्भ का सफल आयोजन किया जायेगा। महाकुम्भ में आने वाले पर्यटकों व श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पर्यटन विभाग मोबाइल एप भी तैयार करेगा। देश के सभी रेलवे स्टेशन व बस अड्डों सहित अन्य प्रमुख स्थलों पर इस एप क्यूआर कोड के माध्यम से प्रदर्शित किया जायेगा। प्रयागराज में होने वाले महाकुम्भ की सुरक्षा को लेकर योगी सरकार बड़े पैमाने पर तैयारी कर रही है। महाकुम्भ में सुरक्षा के लिए इजराइल की एण्टी ड्रोन तकनीक का इस्तेमाल किया जायेगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं केन्द्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने महाकुम्भ की तैयारियों को लेकर एक समीक्षा बैठक की। इस बैठक में महाकुम्भ सनातन, संस्कृति, विविधपूर्ण, सामाजिक परिवेश और लोक आस्था का संगम है। वर्ष 2019 में कुम्भ के आयोजन में कुल 5721 संस्थाओं ने भागीदारी की थी, इस बार लगभग 10 हजार संस्थायें इस आयोजन के लिए काम कर रही हैं। इस बार के महाकुम्भ को और अधिक दिव्य और भव्य बनाने के लिए 4000 हेक्टेयर के मेला क्षेत्र को 25 सेक्टरों में बांटा गया है। 12 किलोमीटर लम्बाई के घाट, 1850 हेक्टेयर में पार्किंग, 450 किलोमीटर लोहे की चकई प्लेट की सड़कें, 30 पांटून पुल, 67000 स्ट्रीट लाइट, 1,50,000 शौचालय व टेण्ट सिटी में 25 हजार से अधिक पर्यटकों के रूकने की व्यवस्था की रही है। पौष पूर्णिमा, मकर संक्रान्ति, मौनी अमावस्या, बसन्त पंचमी, माघ पूर्णिमा और महाशिवरात्रि के विशेष स्नान पर्व पर सुरक्षा और सुविधा के लिए विशेषर कार्य योजना तैयार की गई है। इसके साथ ही नदी में जीरो डिस्चार्ज सुनिश्चित किया जा रहा है।

इस बार महाकुम्भ–2025 में अनुमान है कि 50 करोड़ श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त केन्द्र और प्रदेश सरकार की ओर से ही सारे प्रबन्ध किये जा रहे हैं। शहर से लेकर संगम तक सड़कें, चौराहे, मुख्य मार्ग के किनारे घरों की दीवारों, संस्थानों, प्रतिष्ठानों व उनकी चहारदीवारी पर कलाकृतियां बनाई जा रही हैं।

महाकुम्भ–2025 में उत्तर प्रदेश के पर्यटन को नई ऊंचाईयों पर ले जाने का बहुत बड़ा अवसर है। संस्कृति मंत्रालय महाकुम्भ में पर्यटकों को पूरे भारत की संस्कृति का दर्शन करवाने की तैयारी कर रहा है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए एक समिति गठित की जायेगी। भारत सरकार के मार्गदर्शन में स्वदेश दर्शन योजना के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के नये पर्यटन स्थानों को जोड़ने के लिए भी प्रस्ताव मांगे गये हैं। महाकुम्भ में नई संस्थाओं को भी जमीन और सुविधायें दी जायेंगी। मेला प्राधिकरण ने जमीन की उपलब्धता के आधार पर नई संस्थाओं को भूमि आवंटित करने का निर्णय लिया है। नई तथा पुरानी संस्थाओं को जमीन व सुविधाओं के लिए ऑनलाइन आवेदन शुरू हो गये हैं।

तीर्थराज प्रयाग का कुम्भ पर्व–2025 पौष पूर्णिमा से

आरम्भ हो रहा है। मानवता की अमूर्त धरोअर के तौरा पर यूनेक्सों से मान्यता प्राप्त करने वाले इस महाकुम्भ के आयोजन को लेकर केन्द्र और प्रदेश सरकार कोई असर नहीं छोड़ना चाहती है। विश्व के सबसे बड़े धार्मिक जन समागम में दुनिया भर की सहभागिता हो, इसके लिए वैश्विक स्तर पर प्रचार–प्रसार किया जायेगा। विदेशों में बकायदा रोड शो किये जायेंगे, खासतौर पर अप्रवासी भारतीयों की बहुलता वाले देशों में बड़े आयोजन भी होंगे। शहरों में रोड शो समेत कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। रोड शो के साथ ही धार्मिक आयोजन भी होंगे, जिसमें उस देश में रहने वाले सन्त भी शामिल होंगे। इन आयोजनों में महाकुम्भ को लेकर स्माल मूवी, फोटो गैलरी आदि दिखाई जायेगी। छायांकन, प्रदर्शनी, शास्त्रीय गायन, वादन, पेण्टिंग प्रतियोगितायें भी होंगी। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भारत सरकार एवं उ.प्र. सरकार के प्रतिनिधि शामिल होंगे। इसके साथ ही केन्द्र तथा राज्य सरकार के

महाकुम्भ–2025 को वैश्विक बनाने के लिए अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, जापान, मॉरीशस, इण्डोनेशिया, श्रीलंका, कम्बोडिया, गुयाना, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनराम, फिजी, सिंगापुर, थाईलैण्ड, आस्ट्रेलिया महाद्वीप समेत एशिया, यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया महाद्वीप के 194 देशों में प्रमोशन प्रोग्राम होंगे। इसके तहत भारतीय दूतावासों की ओर से इन देशों की राजधानियों व प्रमुख मंत्रियों के अलावा उच्चाधिकारी भी जायेंगे। इस कार्यक्रमों के माध्यम से सभी 194 देशों में अप्रवासी भारतीय से सम्पर्क साधा जायेगा और उन्हें महाकुम्भ में आने का निमंत्रण दिया जायेगा। केन्द्रीय पर्यटन संस्कृति व विदेश मंत्रालय को रोड शो व अन्य कार्यक्रमों की जिम्मेदारी सौंपी गयी है। इसके लिए कई एजेन्सियों को लगाया गया है। महाकुम्भ की वैश्विक बाड्रिंग को लेकर प्रदेश में मण्डल स्तर पर समिट

प्रोग्राम शुरू हो गया है। राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम करने की योजना को अमली जामा पहनाया जा चुका है। विदेश में रोड शो और अन्य कार्यक्रम फाइनल किये जा रहे हैं।

प्रयागराज में 14 जनवरी, 2025 में आयोजित होने वाले महाकुम्भ में योगी सरकार द्वारा मेले के माध्यम से पूरी दुनिया को ग्रीन व स्वच्छ महाकुम्भ का संदेश देगी। इसकी तैयारियां जोर–शोर से शुरू कर दी गई हैं। मेले का आयोजन को लेकर प्रयागराज में विभिन्न योजनाओं को निर्धारित समय में पूरा करने का लक्ष्य पर युद्ध स्तर पर काम किया जा रहा है। महाकुम्भ के मूल्यांकन की जिम्मेदारी आई.आई.टी. कानपुर को सौंपी गई है। मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह की अध्यक्षता में महाकुम्भ मेला की शीर्ष समिति की 11वीं बैठक हुई। उन्होंने निर्देश दिये कि सम्बन्धित विभागों के अपर मुख्य सचिव या प्रमुख सचिव स्थलीय निरीक्षण कर परियोजनाओं का कार्य तय समय में पूरा करना सुनिश्चित करायें। उन्होंने कहा कि मेले के माध्यम से ग्रीन व स्वच्छता का संदेश देने पर 4.87 करोड़ रूपये खर्च किये जायेंगे। मेले में एक हजार ई–रिक्शों की परेड निकाल कर विश्व रिकार्ड बनाया जायेगा। 15,000 लोगों के माध्यम से घाटों व नदियों की सफाई की भी विश्व रिकार्ड बनेगा। गंगा पंडाल व मेला क्षेत्र में मात्र आठ घंटे में 10 हजार लोगों के हाथों हैण्डप्रिन्ट बनाने का भी विश्व रिकार्ड बनाया जायेगा। मुख्य सचिव ने धार्मिक पाठ्य–पुस्तकों की लाइब्रेरी स्थापित करने के निर्देश दिये हैं।

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अपेक्षाओं और नियोजन के अनुरूप प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ मेला अवधि में इस बार स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकारों के लिए चौबीसों घंटे कार्यरत वाई.फाई. तथा ब्राडबैण्ड सुविधायुक्त ऐसा अनोखा ''विश्व स्तरीय मीडिया सेन्टर'' संचालित किया गया है जिसे देखने, समझने महाराष्ट्र, नई दिल्ली, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान, पंजाब तथा बिहार के जन प्रतिनिधि तथा देश-विदेश की मीडिया के आने की सम्भावना जतायी जा रही है।

बैठक में कई प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है, इनमें रू. 281,84 लाख की लागत से रैना मार्ग का चौड़ीकरण, अस्थाई स्टोर के लिए पहुंच मार्ग के निर्माण के साथ अन्य स्टोर सम्बन्धित कार्य के लिए रू.798.17 लाख के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई है। महाकुम्भ–2025 को लेकर देश–विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं व पर्यटकों को ठहरने के लिए शहर में लगभग तीन हजार पेइंग गेस्ट हाऊस तैयार कराये जा रहे हैं। इनका पर्यटन विभाग में पंजीकरण शुरू करा दिया गया है। इन पेइंग गेस्ट हाऊस की जानकारी पर्यटन विभाग और महाकुम्भ की वेबसाइट से ही कैब व गाइड की सुविधा भी मिल सकेगी।

प्रयागराज में पी.जी. हाऊस संचालित कराने के लिए गृह स्वामियों के साथ ही स्थानीय लोगों को जागरूक करेगी। पी.जी. हाऊस के संचालन में नियम, कायदे भी तय करेगी। पी.जी. हाऊस के लिए घरों को कैसे सजाया और संवारा जाए, इसका प्रशिक्षण भी यही एजेन्सी देगी। नाश्ता और भोजन से लेकर पी.जी. हाऊस की व्यवस्था को लेकर एजेन्सी गृह स्वामियों को प्रशिक्षित करेगी। यह पी.जी. हाऊस कीड़गंज, सलोरी, बधाज, शिवकुटी, अलोपीबाग, जार्ज टाऊन, टैगोर टाऊन, मम्फोर्डगंज, सिविल लाइन्स, तेलियरगंज, झूंसी व फाफामऊ में भी संचालित किये जायेंगे। यह एजेन्सी अयोध्या में 1200 से भी ज्यादा पी.जी. हाऊस संचालित करा रही है।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने महाकुम्भ–2025 के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए सभी राज्यों की राजधानियों के साथ नासिक, उज्जैन, हरिद्वार जैसे धार्मिक महत्व वाले शहरों में रोड शो व सांस्कृतिक कार्यक्रम करने के निर्देश दिये गये हैं। संस्कृति एवं पर्यटन विभाग की महाकुम्भ से जुड़ी तैयारियों की समीक्षा बैठक में निर्णय लिया गया है कि सभी जिलों के कलाकारों को प्रचार–प्रसार से जोड़कर सांस्कृतिक सन्ध्या का आयोजन किया जाये। जो

भी कलाकार सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना चाहते हैं, वे संस्कृति विभाग की वेबसाइट पर अपना पंजीकरण सुनिश्चित करा लें। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन व रोड शो के लिए संस्कृति विभाग और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग को जिम्मेदारी दी गई है। सूचना विभाग पूरे देश में कुम्भ यात्रा के लिए मोबाइल बस चालित करेगा। इससे महाकुम्भ के इतिहास व इसके पौराणिक महत्व को एल.ई.डी. के माध्यम से प्रदर्शित किया जायेगा। युवा पीढ़ी के साथ ही उनके परिवार को महाकुम्भ में सहभागिता के लिए प्रेरित करने के लिए विश्व विद्यालयों, महाविद्यालयों, इन्टर कालेजों और स्कूलों में आयोजन किया जायेगा। प्री कुम्भ समिट के अन्तर्गत कुम्भ अभिनन्द न शो, कुम्भ लेजर शो, डिजीटल प्रदर्शनी, संगोष्ठी, आन स्पाट, प्रतियोगिता कुम्भ क्विज, भक्तिमय प्रस्तुतियों, फ्यूजन शो, नृत्य नाटिकायें, लोक कलाकारों की प्रस्तुति व लघु फिल्म का आयोजन किया जायेगा।

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अपेक्षाओं और नियोजन के अनुरूप प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ मेला अवधि में इस बार स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकारों के लिए चौबीसों घंटे कार्यरत वाई. फाई. तथा ब्राडबैण्ड सुविधायुक्त ऐसा अनोखा ''विश्व स्तरीय मीडिया सेन्टर'' संचालित किया गया है जिसे देखने, समझने महाराष्ट्र, नई दिल्ली, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान, पंजाब तथा बिहार के जन प्रतिनिधि तथा देश–विदेश की मीडिया के आने की सम्भावना जतायी जा रही है।

सूचना विभाग द्वारा इस ऐतिहासिक महाकुम्भ–2025 के प्रचार–प्रसार के माध्यम से ''सनातन संस्कृति का संदेश'' का जिम्मा पूरे विश्व तक पहुंचाने में अहम् भूमिका अदा करेगा। ◆

मो. : 945305958

सशक्त नारी सशक्त प्रदेश

–मुकुल मिश्रा

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की सरकार ने अपने साढ़े सात वर्ष का कार्यकाल पूरा कर लिया है। इन साढ़े सात वर्षों में प्रदेश हर क्षेत्र में प्रगति की नई पायदान छू रहा है। योगी सरकार की यह दूसरी पारी और भी सधी–सशक्त व दूरगामी संदेशों से भरी है। योगी सरकार की नीतियों से समाज का काई भी वर्ग अछूता नहीं है, फिर आधी आबादी कैसे पीछे रह सकती है। योगी सरकार महिलाओं और बेटियों के प्रति खासी जागरूक हैं। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि हमारी डबल इंजिन की सरकार महिलाओं की सुरक्षा और उनके सशक्तीकरण के लिए कृत संकल्पित है। हमारा वायदा है कि हम उन्हें सुरक्षित और आत्मनिर्भर बनने में मदद करेंगे। आज हमारी माताएं, बहनें और बेटियां हर क्षेत्र में आगे हैं और नये भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

किसी भी राष्ट्र में महिला सशक्तीकरण तब होता है जब उस राष्ट्र की महिलाएं–बेटियां आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त और समृद्ध होती हैं। राज्य की योगी सरकार महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण तो कर रही है बल्कि इसके लिए वह एक ऐसा वातावरण बना रही है, जिसमें वे खुद को सुरक्षित महसूस कर सकें। योगी सरकार ने महिलाओं और बेटियों को हर क्षेत्र में समान अवसर उपलब्ध कराने के लिए अनेक योजनाएं ना सिर्फ बनायी हैं बल्कि उन पर शत–प्रतिशत अमल भी हो रहा है। योगी सरकार का मानना है कि जब तक इस आधी आबादी की हर क्षेत्र में महिलाओं की अधिक से अधिक भागीदारी नहीं होगी तब तक प्रदेश और देश का विकास संभव नहीं है। महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए चाहिए सुरक्षित माहौल और सुविधाएं, जिसके लिए योगी सरकार का हर विभाग काम कर रहा है। पहले बालिका शिक्षा का आंकड़ा अपेक्षाकृत शहरों में अधिक था, लेकिन योगी सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में भी बालिकाओं की शिक्षा पर जोर दिया है। महिलाओं की शिक्षा के साथ ही उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया गया। बालिकाओं को खेल–कूद में आगे लाने तथा तथा उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा भी है कि हमारी सरकार महिलाओं–बेटियों को सुरक्षित वातावरण देने के लिए कृत संकल्पित है। आज हमारे प्रदेश की माताएं, बहनें और बेटियां आगे बढ़ रही हैं। कोई भी राष्ट्र तब तक आगे नहीं बढ़ सकता जब तक उस राष्ट्र में महिलाओं का सशक्त योगदान न हो। योगी सरकार शीर्ष प्राथमिकता में प्रदेश की कानून एवं शान्ति व्यवस्था तो है ही साथ ही आधी

आबादी–नारी सुरक्षा, सम्मान और उसे स्वावलम्बी बनाना भी है। इन्हें शक्ति, सम्मान और गौरव दिलाने के लिए अनेक योजनाएं बनायी गयी हैं जो धरातल पर काम कर रही हैं। महिलाओं के विरूद्ध होने वाले अपराधों में अपराधियों को सजा दिलवाने में देश में उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है। ऐसा माना जाता है कि एक महिला की बात, एक महिला ही आसानी से समझ सकती है। तभी तो सुरक्षा व्यवस्था में महिलाओं की अधिक भागीदारी सुनिश्चत कराने के लिए महिला थाने बने और उनमें महिला पुलिस अधिकारियों की तैनाती की गयी। महिलाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए तीन पीएसी बटालियनों के गठन का निर्णय भी लिया है। यह बटालियन राजधानी लखनऊ, गोरखपुर और बदायूं में होंगी। महिला थाने बनाये गये हैं। जिससे किसी भी विपरीत परिस्थिति में प्रभावित होने पर अपनी बात को वह एक महिला पुलिस अधिकारी–कर्मचारी से आसानी से कह सकें और उन्हें तुरन्त ही सुरक्षा व संरक्षा प्रदान की जा सके। वीमेन पावर लाइन 1090 की स्थापना की गयी। महिला हेल्पलाइन बनायी गयी। इसके साथ ही मुख्यमंत्री हेल्पलाइन है, पुलिस की आपातकालीन सेवा तो पहले से ही है। 1535 पुलिस स्टेशनों में 15,130 महिला पुलिस अधिकारियों की तैनाती की गयी। एक जनवरी 2023 से 30 जून, 2024 तक महिलाओं एवं बालिकाओं के विरूद्ध दर्ज हुए 6,792 विभिन्न अपराधों में 16 मामलों में मृत्युदण्ड की सजा हुयी, जबकि पाक्सो एक्ट के तहत दर्ज हुए 429 मामलों में आजीवन कारावास की सजा हुयी। इसी तरह महिला हेल्प लाइन 181 ने 7.17 लाख महिलाओं की सहयता की। यूपी 112 के द्वारा 346 महिलाओं को सुरक्षा उपलब्ध करायी गयी है। रात में काम करके वापस घर लौटने वाली महिलाओं अथवा रात के समय किसी विपरीत परिस्थिति में घिर जाने वाली महिलाओं को सुरक्षित उनके गन्तव्य तक पहुंचाने के लिए भी योगी सरकार ने एक सुविधा शुरू की है। इसके तहत रात दस बजे से सुबह छह बजे के बीच उन्हें सुरक्षा उपलबध करायी जा रही है। प्रदेश के 18 साइबर पुलिस स्टेशनों पर महिला साइबर सेल की स्थापना की गयी है। मानव तस्करी रोकने के लिए 75 एन्टी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट्स को पुलिस स्टेशनों में उच्चीकृत किया गया है। मिशन शक्ति के पांचवे चरण में हर पुलिस स्टेशन में महिला बैरक की स्थापना की गयी है। रानी लक्ष्मीबाई बाल एवं महिला सम्मान कोष की स्थापना की गयी। इस कोष में वर्ष 2024–25 के लिए 50 करोड़ की व्यवस्था की गयी है। इस कोष से जघन्य अपराधों से पीड़ित महिला एवं बच्चों की आर्थिक मदद की जायेगी। इससे अब तक 8,197 महिलाओं एवं बच्चों की मदद की जा चुकी है। इसके साथ ही राज्य महिला आयोग भी महिला अधिकारों के लिए सक्रिय है। जो महिला संवासिनी गृहों, अटल आवासीय विद्यालयों, कस्तूरबा विद्यालय, महिला छात्रावासों और आश्रम पद्धति के विद्यालयों में नियमित निरीक्षण करता है। जिससे वहां रहने वाली महिलाओं एवं बच्चों को होनेवाली दिक्कतों पर ध्यान रखा जा सके और उन्हें बेहतर सुविधाएं मुहैय्या हो सकें।

राज्य की योगी सरकार ने जब वर्ष 2024–25 का अपना बजट पेश किया तो उसमें भी महिलाओं को सशक्त बनाने वाली योजनाओं में अधिक धन आवंटित किया। वैसे तो महिला एवं बाल विकास विभाग अलग से कार्यरत है जो महिलाओं को हर तरह से सशक्त बनाने के लिए काम करता है। बावजूद इसके राज्य की महिलाओं और बेटियों की सुरक्षा, चिकित्सा, शिक्षा व उनके भविष्य आदि के प्रति सकारात्मक फैसले लिए जा रहे हैं। नारी सुरक्षा, नारी सम्मान और नारी स्वावलम्बन को मिशन शक्ति का नाम देकर उनके समग्र विकास की परिकल्पना की गयी है। योगी के सशक्त नारी–सशक्त प्रदेश के नारे को साकार करने के लिए जो सबसे ज्यादा जरूरी है–वह है महिलाओं की सुरक्षा। जब वे घर से बाहर निकलें तो खुद को पूरी तरह से सुरक्षित महसूस कर सकें और उनके घर–परिवार के लोग भी पूरी तरह से निश्चिन्त हों। महिलाओं की शिक्षा, जागरूकता, प्रशिक्षण, पोषण, स्वच्छता समेत उनके उत्थान की अनेक योजनाएं संचालित हैं, जिनका उन्हें लाभ मिल रहा है। बजट में बताया गया कि प्रदेश में अनुपूरक पुष्टाहार से लगभग दो करोड़ 6 लाख लाभार्थियों को लाभान्वित किया जा रहा है। हॉट कुक्ड मील योजना के अन्तर्गत आंगनबाड़ी केन्द्रों में तीन वर्ष से छह वर्ष आयु के 79.37 लाख बच्चों को गर्म पका भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। पुष्टाहार कार्यक्रम के लिए लगभग 5129 करोड़ रूपये की व्यवस्था प्रस्तावित है। इसी तरह मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के लिए सात सौ करोड़ रूपये की व्यवस्था की गयी। निराश्रित महिलाओं के भरण पोषण अनुदान के लिए 4073 करोड़ की व्यवस्था, वृद्धावस्था पेंशन के लिए 7377 करोड़ की व्यवस्था प्रस्तावित की गयी।

बालिकाओं के आत्मनिर्भर बनाने एवं उनमें आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए स्कूल स्तर पर अनेक कार्यक्रम

आयोजित किये जा रहे हैं। इसमें प्रधानाचार्य और शिक्षकों द्वारा छात्राओं का बाल अधिकार, घरेलू हिंसा, यौन शोषण तथा गुड टच और बैड टच के बारे जानकारी दी जा रही है। इसके साथ ही छात्राओं को सरकार द्वारा संचालित विभिन्न हेल्प लाइन नम्बरों की जानकारी, बाल विवाह के बारे में अनेक कार्यक्रमों, रैलियों आदि के माध्यम से बताया जाता है। दस लाख लड़कियों को सेल्फ डिफेन्स की ट्रेनिंग दी जा चुकी है और आत्मनिर्भर व आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए कौशल विकास के अनेकों कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। लड़कियों को बेहतर भविष्य बनाने के लिए उनकी कैरियर काउन्सलिंग भी की जा रही है। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की 79000 छात्राओं को जलवायु परिवर्तन पर जानकारी दी जा चुकी है। सेमीनार–वेबीनार के माध्यम से भी बालिका शिक्षा पर जागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। अप्रैल–मई 2025 तक अभियान चलाकर बच्चों को उनके कानूनी अधिकारों–जिसमें उनके शिक्षा का अधिकार, पाक्सो एक्ट, घरेलू हिंसा व शादी से संबंधित कानूनी अधिकारों की जानकारी दी जायेगी। जिससे वे अपने मौलिक अधिकारों के प्रति पूरी तरह से जागरूक हों सके। इसके साथ ही जिलों में महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए रोजगार की दिशा में भी काम किये जा रहे हैं। जिसमें उनको ई–रिक्शा का प्रशिक्षण दिया जाना भी शामिल है।

देखा गया है कि शिक्षा के अभाव में माहवारी के दौरान पूरी तरह से साफ–सफाई न रखने पर बालिकाएं व महिलाएं अनेकों बीमारियों का शिकार हो जाती हैं। इसके लिए उन्हें स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जा रहा है। बालिकाओं को सेनेटरी पैड वितरित किये जाते हैं। 36,772 लड़कियों को सेनेटरी पैड वितरित किये गये। बाल संसद, बाल सभा व अभिभावकों को साथ बैठकें कर मासिक धर्म के दौरान रखने वाली स्वच्छता के बारे में जानकारी दी जा रही है। प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजनाा के तहत दस हजार जन औषधि केन्द्रों पर सेनेटरी पैड बहुत कम दामों पर उपलब्ध कराये गये हैं। रोडवेज, रेलवे स्टेशन, स्कूल्स और कालेजों में सेनेटरी नैप्कीन एटीएम मशीन लगायी गयी है।

योगी सरकार ने बेटियों को शिक्षा के अवसर देने के मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना शुरू की, जिसमें अब तक 19.50 लाख बेटियां लाभान्वित हुयी हैं। निर्धन परिवार की बेटियों की शादी के लिए मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना चलायी गयी, जिसमें तीन लाख 82 हजार जोड़ों का विवाह करवाया गया है। निराश्रित महिलाओं को पेंशन से आच्छादित कर इन्हें संबल दिया गया। इस योजना में लाभान्वित होने वाली महिलाओं की आयु सीमा की बाध्यता को समाप्त किया गया। इसके तहत 32.71 लाख निराश्रित महिलाओं को एक हजार रूपया प्रति माह पेंशन दी जा रही है। इसी तरह से छाटे बच्चों, महिलाओं और किशोरियों में कुपोषण और रक्त की कमी को कम करने के लिए राष्ट्रीय पोषण मिशन में इन्हें आच्छादित किया जा रहा है। महिलाओं के लिए नगरीय क्षेत्र में 4500 पिंक टॉयलेट बनवाये गये हैं। 58 हजार बैंकिग सखी बनायी गयी।

महिलाओं के लिए हर घर नल से जल योजना भी वरदान साबित हो रही है। इसने उनकी परेशानी को काफी कम किया है। घर से कोसों दूर पानी लेने जाना पड़ता था। उस दूरी को तय करने पर ना सिर्फ कई घटनाएं हो जाती थीं बल्कि दिन का आधा समय इसी में व्यतीत हो जाता था। पहले परिवार के लिए पानी जुटाना हो या फिर भोजन बनाने के लिए लकड़ी एकत्रित करना, एक बड़ी समस्या के रूप में महिला को ही इससे रूबरू होना पड़ता था। अब नल से जल और गैस सिलेण्डर ने उन्हें काफी राहत दी है। प्रदेश की योगी सरकार जिस प्रतिबद्धता से राज्य की महिलाओं और बेटियों के लिए सुरक्षित माहौल तैयार कर रही है, उससे आने वाले समय में उत्तर प्रदेश महिलाओं व बेटियों के लिए सपनों की उड़ान भरनेवाला नंबर वन प्रदेश बन जायेगा। ◆

मो. : 9415464591

सनातन गर्व महाकुम्भ पर्व

वेबसाइट
https://kumbh.gov.in/

मोबाइल ऐप
Maha Kumbh Mela 2025

दिव्य-भव्य-डिजिटल महाकुम्भ 2025

13 जनवरी से 26 फरवरी

प्रयागराज

कुम्भ सहायक चैटबॉट हेतु QR कोड स्कैन करें

कुम्भ सहायक
वाट्सऐप नं. 8887847135
पर 'नमस्ते' भेजें

आकस्मिक सेवाएं | मेला प्रशासन | आवास एवं आहार | यूपी की उपलब्धियां

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficeUP

mahakumbh_25/ | upmahakumbh | MahaKumbh_2025 | https://kumbh.gov.in/

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश एन. भार्गव, प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ द्वारा मुद्रित एवं प्रभारी सम्पादक : दिनेश कुमार गुप्ता